THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In so far as Gandhiji was the most influential and revered of all the leaders who participated in the freedom struggle, that characterisation is not misplaced.

चूँकि गाँधी जी स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने वाले सभी नेताओं में सर्वाधिक प्रभावशाली और सम्मानित हैं अतः उन्हें दिया गया उपयुंक्त विशेषण गलत नहीं है।

मार्च 1930 में नमक यात्रा शुरू करने से पूर्व साबरमती नदी के किनारे अपने आश्रम के निकट समर्थकों से बात करते महात्मा गाँधी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

This chapter analyses Gandhiji's activities in India during the crucial period 1915-1948.

इस अध्याय में **1915 - 1948** के महत्त्वपूर्ण काल के दौरान भारत में गाँधी जी की गतिविधियों का विश्लेषण किया गया है।

It explores his interactions with different sections of the Indian society and the popular struggles that he inspired and led.

यह भारतीय समाज के विभिन्न हिस्सों के साथ उनके संपकों और उनके द्वारा प्रेरित तथा नेतृत्व किए गए लोकप्रिय संघषों की छान–बीन करता है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ A Leader Announces Himself

❖ स्वयं की उद्घोषणा करता एक नेता

In January 1915, Mohandas Karamchand Gandhi returned to his homeland after two decades of residence abroad.

मोहनदास करमचंद गाँधी विदेश में दो दशक रहने के बाद जनवरी **1915** में अपनी गृहभूमि वापस आए।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

These years had been spent for the most part in South Africa, where he went as a lawyer, and in time became a leader of the Indian community in that territory.

इन वर्षों का अधिकांश हिस्सा उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में बिताया। यहां वे एक वकील के रूप में गए थे और बाद में वे इस क्षेत्र के भारतीय समुदाय के नेता बन गए।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

As the historian Chandran Devanesan has remarked, South Africa was "the making of the Mahatma".

जैसाकि इतिहासकार चंद्रन देवनेसन ने टिप्पणी की है कि दक्षिण अफ्रीका ने ही गाँधी जी को 'महात्मा' बनाया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

It was in South Africa that Mahatma Gandhi first forged the distinctive techniques of non-violent protest known as satyagraha, first promoted harmony between religions, and first alerted upper - caste Indians to their discriminatory treatment of low castes and women.

दक्षिण अफ्रीका में ही महात्मा गाँधी ने पहली बार सत्याग्रह के रूप में जानी गई अहिंसात्मक विरोध की अपनी विशिष्ट तकनीक का इस्तेमाल किया, विभिन्न धर्मों के बीच सौहार्द बढ़ाने का प्रयास किया तथा उच्च जातीय भारतीयों को निम्न जातियों और महिलाओं के प्रति भेदभाव वाले व्यवहार के लिए चेतावनी दी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The India that Mahatma Gandhi came back to in 1915 was rather different from the one that he had left in 1893.

1915 में जब महात्मा गाँधी भारत आए तो उस समय का भारत **1893** में जब वे यहां से गए थे तब के समय से अपेक्षाकृत भिन्न था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Although still a colony of the British, it was far more active in a political sense. The Indian National Congress now had branches in most major cities and towns.

यद्यपि यह अभी भी एक ब्रिटिश उपनिवेश था लेकिन अब यह राजनीतिक दृष्टि से कहीं अधिक सक्रिय हो गया था। अधिकांश प्रमुख शहरों और कस्बों में अब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखाएँ थीं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Through the Swadeshi movement of 1905-07 it had greatly broadened its appeal among the middle classes.

1905 - 07 के स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से इसने व्यापक रूप से मध्य वर्गों के बीच अपनी अपील का विस्तार कर लिया था।

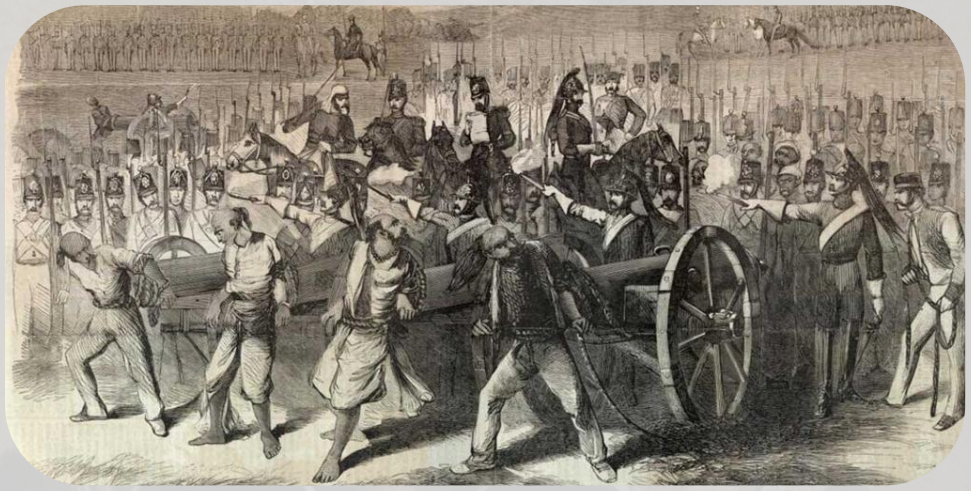

That movement had thrown up some towering leaders – among them Bal Gangadhar Tilak of Maharashtra, Bipin Chandra Pal of Bengal, and Lala Lajpat Rai of Punjab.

इस आंदोलन ने कुछ प्रमुख नेताओं को जन्म दिया, जिनमें महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक, बंगाल के विपिन चंद्र पाल और पंजाब के लाला लाजपत राय हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The alliteration conveying the all-India character of their struggle, since their native provinces were very distant from one another.

य तीनों 'लाल, बाल और पाल' के रूप में जाने जाते थे। इन तीनों का यह जोड उनके संघर्ष के अखिल भारतीय चरित्र की सूचना देता था क्योंकि तीनों के मूल निवास क्षेत्र एक दूसरे से बहुत दूर थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

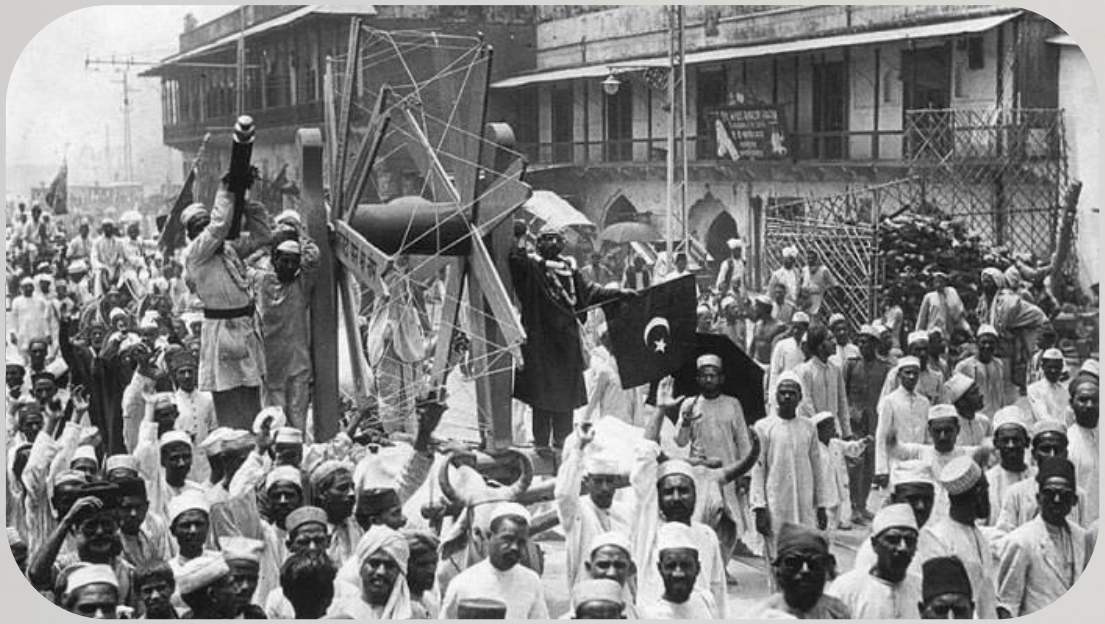

Where these leaders advocated militant opposition to colonial rule, there was a group of "Moderates" who preferred a more gradual and persuasive approach.

इन नेताओं ने जहां औपनिवेशिक शासन के प्रति लड़ाकू विरोध का समर्थन किया वहीं 'उदारवादियों' का एक समूह था जो एक क्रमिक व लगातार प्रयास करते रहने के विचार का हिमायती था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Among these Moderates was Gandhiji's acknowledged political mentor, Gopal Krishna Gokhale, as well as Mohammad Ali Jinnah, who, like Gandhiji, was a lawyer of Gujarati extraction trained in London.

इन उदारवादियों में गाँधी जी के मान्य राजनीतिक परामर्शदाता गोपाल कृष्ण गोखले के साथ ही मोहम्मद अली जिन्ना थे, जो गाँधी जी की ही तरह गुजराती मूल के लंदन में प्रशिक्षित वकील थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

On Gokhale's advice, Gandhiji spent a year travelling around British India, getting to know the land and its peoples.

गोखले ने गाँधी जी को एक वर्ष तक ब्रिटिश भारत की यात्रा करने की सलाह दी जिससे कि वे इस भूमि और इसके लोगों को जान सकें।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

His first major public appearance was at the opening of the Banaras Hindu University (BHU) in February 1916.

उनकी पहली महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी **1916** में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में हुई।

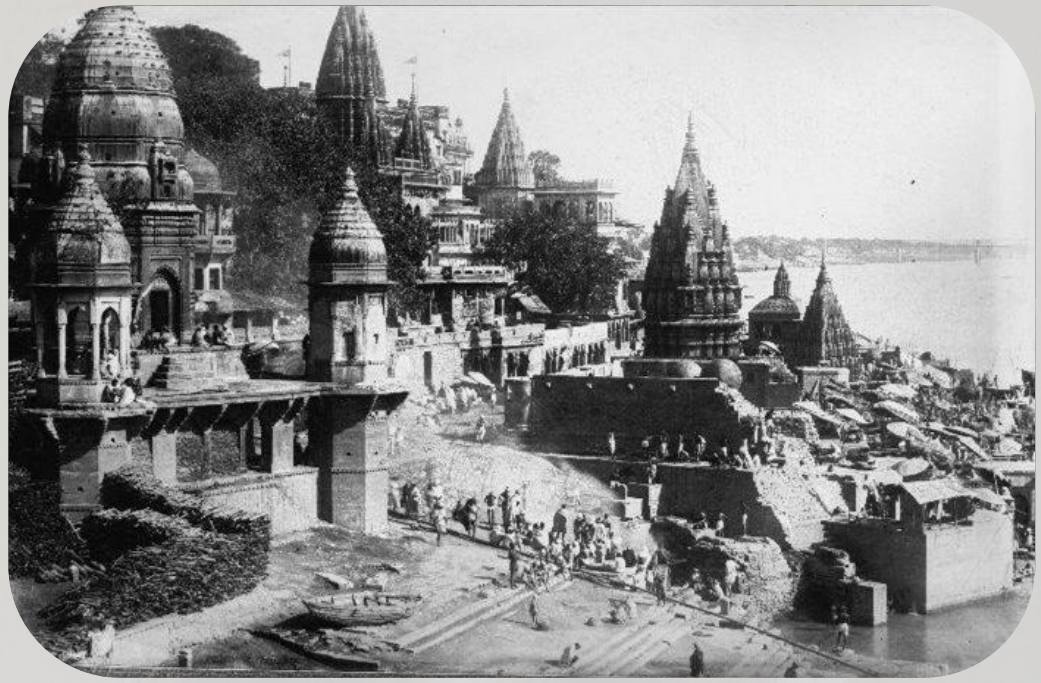

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

करांची में महात्मा गाँधी, मार्च 1916

The opening of the BHU was an occasion for celebration, marking as it did the opening of a nationalist university, sustained by Indian money and Indian initiative.

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना एक उत्सव का अवसर था क्योंकि यह भारतीय धन और भारतीय प्रयासों से संभव एक राष्ट्रवादी विश्वविद्यालय की स्थापना का द्योतक था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Gandhiji's speech at Banaras in February 1916 was, at one level, merely a statement of fact – namely, that Indian nationalism was an elite phenomenon, a creation of lawyers and doctors and landlords.

एक दृष्टि से फरवरी **1916** में बनारस में गाँधी जी का भाषण मात्र वास्तविक तथ्य का ही उद्घाटन था अर्थात भारतीय राष्ट्रवाद वकीलों, डॉक्टरों और ज़मींदारों जैसे विशिष्ट वर्गों द्वारा निर्मित था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ The Making and Unmaking of Non-cooperation

❖ असहयोग की शुरुआत और अंत

The following year, 1918, Gandhiji was involved in two campaigns in his home state of Gujarat. First, he intervened in a labour dispute in Ahmedabad, demanding better working conditions for the textile mill workers.

अगले वर्ष यानी **1918** में गाँधी जी गुजरात के अपने गृह राज्य में दो अभियानों में संलग्न रहे। सबसे पहले उन्होंने अहमदाबाद के एक श्रम विवाद में हस्तक्षेप कर कपड़े की मिलों में काम करने वालों के लिए काम करने की बेहतर स्थितियों की माँग की।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Kheda Satyagraha

Then he joined peasants in Kheda in asking the state for the remission of taxes following the failure of their harvest.

इसके बाद उन्होंने खेड़ा में फ़सल चौपट होने पर राज्य से किसानों का लगान माफ़ करने की माँग की।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

During the Great War of 1914-18, the British had instituted censorship of the press and permitted detention without trial.

1914 - 18 के महान यु्द्ध के दौरान अंग्रेज़ों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था और बिना जाँच के कारावास की अनुमति दे दी थी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Now, on the recommendation of a committee chaired by Sir Sidney Rowlatt, these tough measures were continued. In response, Gandhiji called for a countrywide campaign against the "Rowlatt Act".

अब सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली एक समिति की संस्तुतियों के आधार पर इन कठोर उपायों को जारी रखा गया। इसके जवाब में गाँधी जी ने देशभर में 'रॉलेट एक्ट' के खिलाफ एक अभियान चलाया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The protests were particularly intense in the Punjab, where many men had served on the British side in the War – expecting to be rewarded for their service. Instead they were given the Rowlatt Act.

पंजाब में, विशेष रूप से कड़ा विरोध हुआ, जहां के बहुत से लोगों ने यु्द्ध में अंग्रेज़ों के पक्ष में सेवा की थी और अब अपनी सेवा के बदले वे ईनाम की अपेक्षा कर रहे थे। लेकिन इसकी जगह उन्हें रॉलेट एक्ट दिया गया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Gandhiji was detained while proceeding to the Punjab, even as prominent local Congressmen were arrested.

पंजाब जाते समय गाँधी जी को क़ैद कर लिया गया। स्थानीय कांग्रेसजनों को गिरफ़्तार कर लिया गया था।

The situation in the province grew progressively more tense, reaching a bloody climax in Amritsar in April 1919, when a British Brigadier ordered his troops to open fire on a nationalist meeting.

प्रांत की यह स्थिति धीरे-धीरे और तनावपूर्ण हो गई तथा अप्रैल **1919** में अमृतसर में यह खूनखराबे के चरमोत्कर्ष पर ही पहुँच गई।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

More than four hundred people were killed in what is known as the Jallianwala Bagh massacre.

जब एक अंग्रेज़ ब्रिगेडियर ने एक राष्ट्रवादी सभा पर गोली चलाने का हुक्म दिया तब जलियाँवाला बाग हत्याकांड के नाम से जाने गए इस हत्याकांड में चार सौ से अधिक लोग मारे गए।

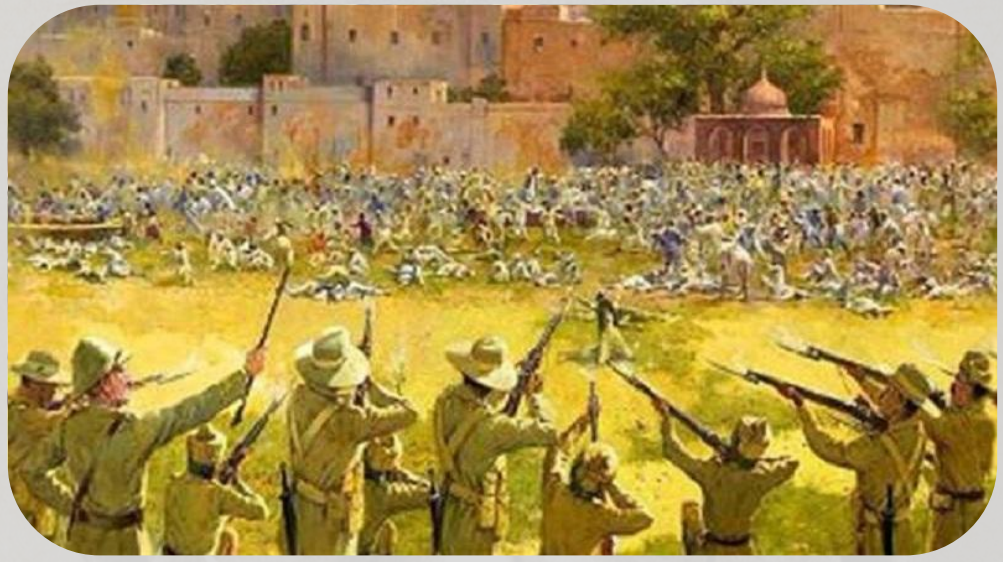

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

It was the Rowlatt satyagraha that made Gandhiji a truly national leader. Emboldened by its success, Gandhiji called for a campaign of "non-cooperation" with British rule.

रॉलेट सत्याग्रह से ही गाँधी जी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए। इसकी सफलता से उत्साहित होकर गाँधी जी ने अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ 'असहयोग' अभियान की माँग कर दी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

If noncooperation was effectively carried out, said Gandhiji, India would win swaraj within a year.

गाँधी जी ने कहा कि यदि असहयोग का ठीक ढंग से पालन किया जाए तो भारत एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त कर लेगा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ What was the Khilafat Movement?

The Khilafat Movement, (1919-1920) was a movement of Indian Muslims, led by Muhammad Ali and Shaukat Ali, that demanded the following:

❖ खिलाफ़त आंदोलन क्या था?

खिलाफ़त आंदोलन (1919 - 1920) मुहम्मद अली और शौकत अली के नेतृत्व में भारतीय मुसलमानों का एक आंदोलन था। इस आंदोलन की निम्नलिखित माँगें थीं–

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The Turkish Sultan or Khalifa must retain control over the Muslim sacred places in the erstwhile Ottoman empire; the jazirat-ul-Arab (Arabia, Syria, Iraq, Palestine) must remain under Muslim sovereignty; and the Khalifa must be left with sufficient territory to enable him to defend the Islamic faith. The Congress supported the movement and Mahatma Gandhi sought to conjoin it to the Non-cooperation Movement.

पहले के ऑटोमन साम्राज्य के सभी इस्लामी पवित्र स्थानों पर तुर्की सुल्तान अथवा खलीफ़ा का नियंत्रण बना रहे, जज़ीरात-उल-अरब (अरब, सीरिया, इराक, फिलिस्तीन) इस्लामी सम्प्रभुता के अधीन रहें तथा खलीफ़ा के पास इतने क्षेत्र हों कि वह इस्लामी विश्वास को सुरक्षित करने के योग्य बन सके। कांग्रेस ने इस आंदोलन का समर्थन किया और गाँधी जी ने इसे असहयोग आंदोलन के साथ मिलाने की कोशिश की।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖Knitting a popular movement

❖एक लोकप्रिय आंदोलन की तैयारी

Gandhiji hoped that by coupling non-cooperation with Khilafat, India's two major religious communities, Hindus and Muslims, could collectively bring an end to colonial rule.

गाँधी जी ने यह आशा की थी कि असहयोग को खिलाफत के साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख धार्मिक समुदाय– हिंदू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

These movements certainly unleashed a surge of popular action that was altogether unprecedented in colonial India.

इन आंदोलनों ने निश्चय ही एक लोकप्रिय कार्रवाही के बहाव को उन्मुक्त कर दिया था और य चीज़ें औपनिवेशिक भारत में बिलकुल ही अभूतपूर्व थीं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

असहयोग आंदोलन, 1922
विदेशी वस्त्रों को इकट्ठा किया जा रहा है ताकि उन्हें आग में जलाया जा सके।

"Non-cooperation," wrote Mahatma Gandhi's American biographer Louis Fischer, "became the name of an epoch in the life of India and of Gandhiji. Non-cooperation was negative enough to be peaceful but positive enough to be effective. It entailed denial, renunciation, and self-discipline.

महात्मा गाँधी के अमरीकी जीवनी–लेखक लुई फिशर ने लिखा है कि 'असहयोग भारत और गाँधी जी के जीवन के एक यग का ही नाम हो गया। असहयोग शांति की दृष्टि से नकारात्मक किंतु प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक था। इसके लिए प्रतिवाद, परित्याग और स्व–अनुशासन आवश्यक थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

in February 1922, a group of peasants attacked and torched a police station in the hamlet of Chauri Chaura, in the United Provinces (now, Uttar Pradesh and Uttaranchal).

फरवरी **1922** में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Several constables perished in the conflagration. This act of violence prompted Gandhiji to call off the movement altogether. "No provocation," he insisted, "can possibly justify (the) brutal murder of men who had been rendered defenceless and who had virtually thrown themselves on the mercy of the mob."

इस अग्निकांड में कई पुलिस वालों की जान चली गई। हिंसा की इस कायंवाही से गाँधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा। उन्होंने ज़ोर दिया कि, 'किसी भी तरह की उत्तेजना को निहत्थे और एक तरह से भीड की दया पर निर्भर व्यक्तियों की घृणित हत्या के आधार पर उचित नहीं ठहराया जा सकता है'।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

During the Non-Cooperation Movement thousands of Indians were put in jail. Gandhiji himself was arrested in March 1922, and charged with sedition.

असहयोग आंदोलन के दौरान हज़ारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया। स्वयं गाँधी जी को मार्च **1922** में राजद्रोह के आरोप में गिरफ़्तार कर लिया गया।

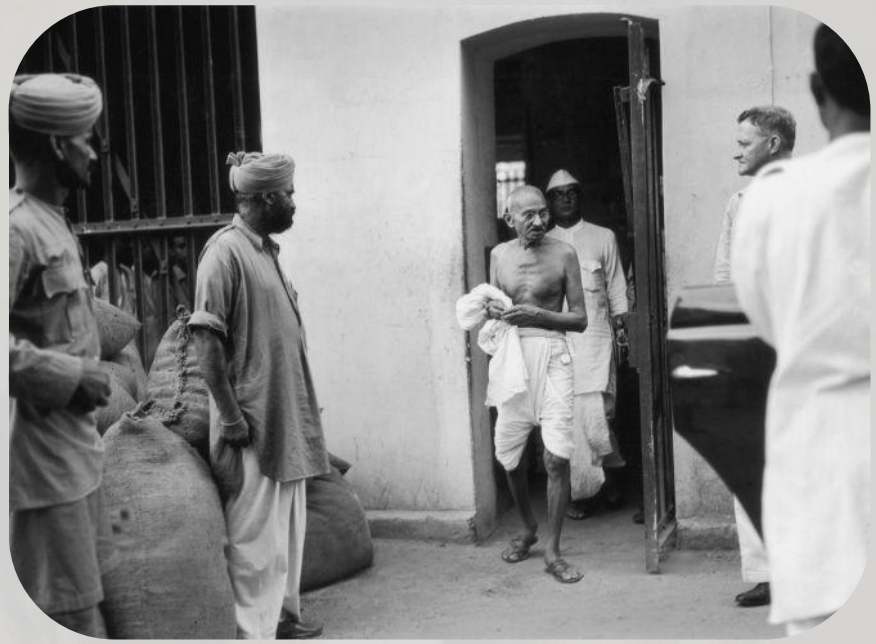

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖A people's leader

❖जन नेता

By 1922, Gandhiji had transformed Indian nationalism, thereby redeeming the promise he made in his BHU speech of February 1916.

1922 तक गाँधी जी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एकदम परिवर्तित कर दिया और इस प्रकार फरवरी **1916** में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अपने भाषण में किए गए वायदे को उन्होंने पूरा किया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

They appreciated the fact that he dressed like them, lived like them, and spoke their language. Unlike other leaders he did not stand apart from the common folk, but empathised and even identified with them.

उन्होंने इस बात की प्रशंसा की कि गाँधी जी उनकी ही तरह के वस्त्र पहनते थे, उनकी ही तरह रहते थे और उनकी ही भाषा में बोलते थे। अन्य नेताओं की तरह वे सामान्य जनसमूह से अलग नहीं खड़े होते थे बल्कि वे उनसे समानुभूति रखते तथा उनसे घनिष्ठ संबंध भी स्थापित कर लेते थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

This identification was strikingly reflected in his dress: while other nationalist leaders dressed formally, wearing a Western suit or an Indian bandgala, Gandhiji went among the people in a simple dhoti or loincloth.

सामान्य जन के साथ इस तरह की पहचान उनके वस्त्रों में विशेष रूप से परिलक्षित होती थी। जहां अन्य राष्ट्रवादी नेता पश्चिमी शैली के सूट अथवा भारतीय बंदगला जैसे औपचारिक वस्त्र पहनते थे वहीं गाँधी जी लोगों के बीच एक साधारण धोती में जाते थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Meanwhile, he spent part of each day working on the charkha (spinning wheel), and encouraged other nationalists to do likewise. The act of spinning allowed Gandhiji to break the boundaries that prevailed within the traditional caste system, between mental labour and manual labour.

इस बीच, प्रत्यक दिन का कुछ हिस्सा वे चरखा चलाने में बिताते थे। अन्य राष्ट्रवादियों को भी उन्होंने एसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। सूत कताई के कायं ने गाँधी जी को पारंपरिक जाति व्यवस्था में प्रचलित मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम की दीवार को तोड़ने में मदद दी।

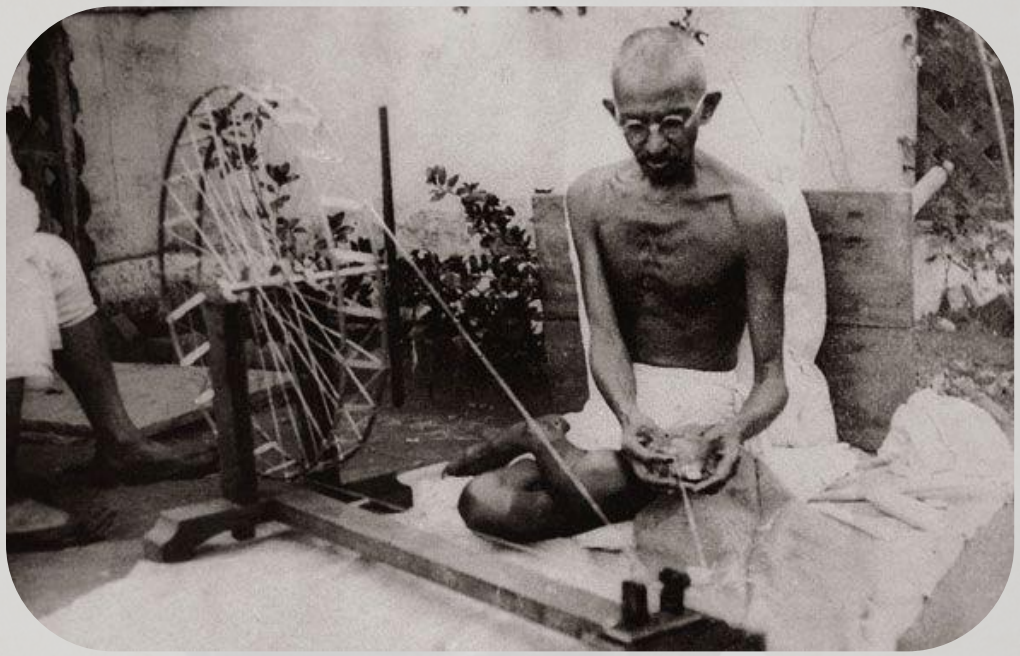

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ Charkha

Mahatma Gandhi was profoundly critical of the modern age in which machines enslaved humans and displaced labour. He saw the charkha as a symbol of a human society that would not glorify machines and technology. The spinning wheel, moreover, could provide the poor with supplementary income and make them self-reliant.

❖ चरखा

महात्मा गांधी आधुनिक युग, जिसमें मशीनों ने मानव को गुलाम बनाकर श्रम को हटा दिया था, के घोर आलोचक थे। उन्होंने चरखा को एक एसे, मानव समाज के प्रतीक रूप में देखा, जिसमें मशीनों और प्रौद्योगिकी को बहुत महिमामंडित नहीं किया जाएगा। इससे भी अधिक चरखा गरीबों को पूरक आमदनी प्रदान कर सकता था तथा उन्हें स्वावलम्बी बना सकता था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

What I object to, is the craze for machinery as such. The craze is for what they call laboursaving machinery. Men go on "saving labour", till thousands are without work and thrown on the open streets to die of starvation.

मेरी आपत्ति मशीन के प्रति सनक से है। यह सनक श्रम बचाने वाली मशीनरी के लिए है। य तब तक 'श्रम बचाते' रहेंगे जब तक कि हज़ारों लोग बिना काम के और भूख से मरने के लिए सड़कों पर न फेंक दिए जाएँ।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

I want to save time and labour, not for a fraction of mankind, but for all; I want the concentration of wealth, not in the hands of few, but in the hands of all.

YOUNG INDIA, I3 NOVEMBER 1924

मैं मानव समुदाय के किसी एक हिस्से के लिए नहीं बल्कि सभी के लिए समय और श्रम बचाना चाहता हूं : मैं धन का केंद्रीकरण कुछ ही लोगों के हाथों में नहीं बल्कि सभी के हाथों में करना चाहता हूँ।

यंग इंडिया, **13** नवंबर **1924**

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Khaddar does not seek to destroy all machinery but it does regulate its use and check its weedy growth. It uses machinery for the service of the poorest in their own cottages. The wheel is itself an exquisite piece of machinery.

YOUNG INDIA, 17 MARCH 1927

खद्दर मशीनरी को नष्ट नहीं करना चाहता बल्कि यह इसके प्रयोग को नियमित करता है और इसके विकास को नियंत्रित करता है। यह मशीनरी का प्रयोग सर्वाधिक ग़रीब लोगों के लिए उनकी अपनी झोपडियों में करता है। पहिया अपने आप में ही मशीनरी का एक उत्कृष्ट नमूना है।

यंग इंडिया, **17** मार्च **1927**

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Wherever Gandhiji went, rumours spread of his miraculous powers. In some places it was said that he had been sent by the King to redress the grievances of the farmers, and that he had the power to overrule all local officials.

गांधी जी जहां भी गए वहीं उनकी चामत्कारिक शक्तियों की अफवाहें फैल गइं। कुछ स्थानों पर यह कहा गया कि उन्हें राजा द्वारा किसानों के दुख तकलीफों में सुधार के लिए भेजा गया है तथा उनके पास सभी स्थानीय अधिकारियों के निर्देशों को अस्वीकृत करने की शक्ति है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In other places it was claimed that Gandhiji's power was superior to that of the English monarch, and that with his arrival the colonial rulers would flee the district.

कुछ अन्य स्थानों पर यह दावा किया गया कि गांधी जी की शक्ति अंग्रेज़ बादशाह से उत्कृष्ट है और यह कि उनके आने से औपनिवेशिक शासक ज़िले से भाग जाएँगे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Known variously as "Gandhi baba", "Gandhi Maharaj", or simply as "Mahatma", Gandhiji appeared to the Indian peasant as a saviour, who would rescue them from high taxes and oppressive officials and restore dignity and autonomy to their lives.

'गांधी बाबा', 'गांधी महाराज' अथवा सामान्य 'महात्मा' जैसे अलग-अलग नामों से ज्ञात गांधी जी भारतीय किसान के लिए एक उद्धारक के समान थे जो उनकी ऊँची करों और दमनात्मक अधिकारियों से सुरक्षा करने वाले और उनके जीवन में मान-मर्यादा और स्वायत्तता वापस लाने वाले थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ The miraculous and the unbelievable

Local newspapers in the United Provinces recorded many of the rumours that circulated at that time. There were rumours that every person who wanted to test the power of the Mahatma had been surprised:

❖ चामत्कारिक व अविश्वसनीय

संयुक्त प्रांत के स्थानीय समाचार-पत्रों में उस समय फैली कई अफवाहें दर्ज हैं। य अफवाहें थीं कि जिस किसी भी व्यक्ति ने महात्मा की शक्ति को परखना चाहा उसे अचंभा हुआ :

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

1. Sikandar Sahu from a village in Basti said on 15 February that he would believe in the Mahatmaji when the karah (boiling pan) full of sugar cane juice in his karkhana (where gur was produced) split into two. Immediately the karah actually split into two from the middle.

1. बस्ती गाँव के सिंकदर साहू ने 15 फरवरी को कहा कि वह महात्मा जी में तब विश्वास करेगा जब उसके कारखाने (जहां गुड का उत्पादन होता था) में गन्ने के रस से भरा कड़ाहा (उबलता हुआ) दो भाग में टूट जाएगा। तुरंत ही कड़ाहा वास्तव में बीच में से दो हिस्सों में टूट गया।

2. **A cultivator in Azamgarh said that he would believe in the Mahatmaji's authenticity if sesamum sprouted on his field planted with wheat. Next day all the wheat in that field became sesamum.**

2. आजमगढ़ के एक किसान ने कहा कि वह महात्मा जी की प्रामाणिकता में तब विश्वास करेगा जब उसके खेत में लगाए गए गेहूं तिल में बदल जाएँ। अगले दिन उस खेत का सारा गेहूं तिल बन गया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

There were rumours that those who opposed Mahatma Gandhi invariably met with some tragedy.

एसी अफ़वाहें थीं कि महात्मा गांधी का विरोध करने वाले लोग निरपवाद रूप से किसी न किसी त्रासदी का शिकार हुए थे।

1. **A gentleman from Gorakhpur city questioned the need to ply the charkha. His house caught fire.**

1. गोरखपुर से एक सज्जन ने चरखा चलाए जाने की आवश्यकता पर प्रश्न उठाया। उनके घर में आग लग गई।

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT
CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन
स वनय अवज्ञा और उससे आगे

2. In April 1921 some people were gambling in a village of Uttar Pradesh. Someone told them to stop. Only one from amongst the group refused to stop and abused Gandhiji. The next day his goat was bitten by four of his own dogs.

2. अप्रैल **1921** में उत्तर प्रदेश के एक गाँव में कुछ लोग जुआ खेल रहे थे। किसी ने उन्हें एसा करने से रोका। जुआ खेल रहे समूह में से एक ने रुकने से मना कर दिया और गांधोजी को अपशब्द कहा। अगले दिन उसकी बकरी को उसके ही चार कुत्तों ने काट खाया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

3. In a village in Gorakhpur, the peasants resolved to give up drinking liquor. One person did not keep his promise. As soon as he started for the liquor shop brickbats started to rain in his path. When he spoke the name of Gandhiji the brickbats stopped flying.

FROM SHAHID AMIN, "GANDHI AS MAHATMA", SUBALTERN STUDIES III, OXFORD UNIVERSITY PRESS, DELHI.

3. गोरखपुर के एक गाँव में किसानों ने शराब पीना छोड़ने का निश्चय किया। एक व्यक्ति अपने निश्चय पर कायम नहीं रहा। जब वह शराब की दुकान की तलाश में जा रहा था तो उसके रास्ते में रोड़ों की बारिश होने लगी। ज्योंही उसने गांधीजी का नाम लिया रोड़ों की बारिश बंद हो गई।

शाहिद अमीन, 'गांधी जी एज़ महात्मा', सबाल्टर्न स्टड़ीज III, ऑक्सफ़ोर्ड य्निवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Where most other politicians talked down to them, Gandhiji appeared not just to look like them, but to understand them and relate to their lives.

जहां अधिकांश अन्य राजनीतिक उन्हें कृपा की दृष्टि से देखते थे वहीं य न केवल उनके जैसा दिखने बल्कि उन्हें अच्छी तरह समझने और उनके जीवन के साथ स्वयं को जोड़ने के लिए सामने आते थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

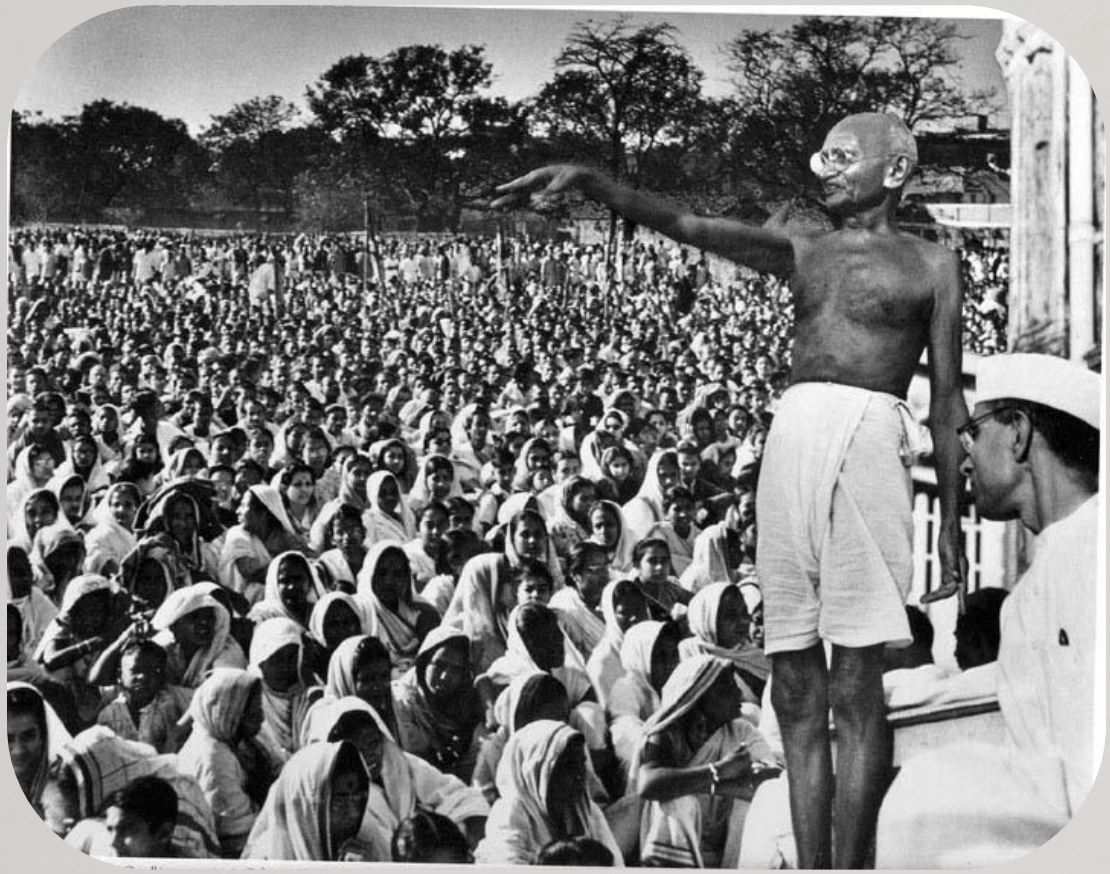

While Mahatma Gandhi's mass appeal was undoubtedly genuine – and in the context of Indian politics, without precedent – it must also be stressed that his success in broadening the basis of nationalism was based on careful organisation.

महात्मा गांधी का जन अनुरोध निस्संदेह कपट से मुक्त था और भारतीय राजनीति के संदर्भ में तो बिना किसी पूर्वोदाहरण के यह भी कहा जा सकता है कि राष्ट्रवाद के आधार को और व्यापक बनाने में उनकी सफलता का राज़ उनके द्वारा सावधानीपूर्वक किया गया संगठन था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Gandhiji encouraged the communication of the nationalist message in the mother tongue, rather than in the language of the rulers, English.

गांधी जी ने राष्ट्रवादी संदेश का संचार शासकों की अंग्रेज़ी भाषा की जगह मात भाषा में करने को प्रोत्साहित किया।

Thus the provincial committees of the Congress were based on linguistic regions, rather than on the artificial boundaries of British India.

इस प्रकार कांग्रेस की प्रांतीय समितियां ब्रिटिश भारत की कृत्रिम सीमाओं की अपेक्षा भाषाई क्षेत्रों पर आधारित थीं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In these different ways nationalism was taken to the farthest corners of the country and embraced by social groups previously untouched by it.

इन अलग-अलग तरीकों से राष्ट्रवाद देश के सुदूर हिस्सों तक फैल गया और अब इसमें वे सामाजिक वर्ग भी शामिल हो गए जो अभी तक इससे अछूत थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

While Mahatma Gandhi's own role was vital, the growth of what we might call "Gandhian nationalism" also depended to a very substantial extent on his followers.

हालाँकि महात्मा गांधी की स्वयं बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका थी लेकिन 'गांधोवादी राष्ट्रवाद' का विकास बहुत हद तक उनके अनुयायियों पर निर्भर करता था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

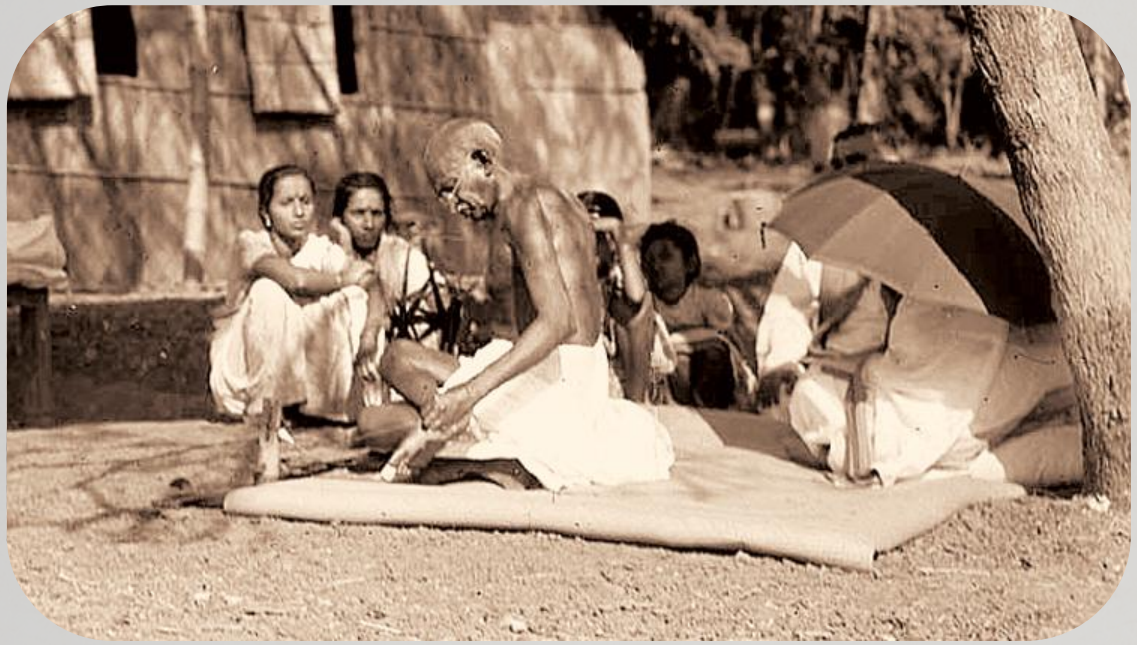

Mahatma Gandhi was released from prison in February 1924, and now chose to devote his attention to the promotion of home-spun cloth (khadi), and the abolition of untouchability.

महात्मा गांधी फरवरी 1924 में जेल से रिहा हो गए और अब उन्होंने अपना ध्यान घर में बुने कपड़े (खादी) को बढ़ावा देने तथा छूआ-छूत को समाप्त करने पर लगाया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

For, Gandhiji was as much a social reformer as he was a politician. He believed that in order to be worthy of freedom, Indians had to get rid of social evils such as child marriage and untouchability.

गांधी जी राजनीतिक जितने थे उतने ही वे समाज सुधारक थे। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता के योग्य बनने के लिए भारतीयों को बाल विवाह और छूआ-छूत जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त होना पड़ेगा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Indians of one faith had also to cultivate a genuine tolerance for Indians of another – hence his emphasis on Hindu-Muslim harmony.

एक मत के भारतीयों को दूसरे मत के भारतीयों के लिए सच्चा संयम लाना होगा और इस प्रकार उन्होंने हिंदू-मुसलमानों के बीच सौहार्द्र पर बल दिया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Meanwhile, on the economic front Indians had to learn to become self-reliant – hence his stress on the significance of wearing khadi rather than mill-made cloth imported from overseas.

इसी तरह आर्थिक स्तर पर भारतीयों को स्वावलंबी बनना सीखना होगा– एसा करके उन्होंने समुद्रपार से आयतित मिल में बने वस्त्रों के स्थान पर खादी पहनने की महत्ता पर ज़ोर डाला।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖The Salt Satyagraha (A Case Study)

❖नमक सत्याग्रह (नज़दीक से एक नज़र)

For several years after the Non-cooperation Movement ended, Mahatma Gandhi focused on his social reform work. In 1928, however, he began to think of re-entering politics.

असहयोग आंदोलन समाप्त होने के कई वर्ष बाद तक महात्मा गांधी ने अपने को समाज सुधार कार्यों पर केंद्रित रखा। **1928** में उन्होंने पुनः राजनीति में प्रवेश करने की सोची।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

That year there was an all-India campaign in opposition to the all-White Simon Commission, sent from England to enquire into conditions in the colony.

उस वर्ष सभी श्वेत सदस्यों वाले साईमन कमीशन, जो कि उपनिवेश की स्थितियों की जाँच-पड़ताल के लिए इंग्लैंड से भेजा गया था, के विरुद्ध अखिल भारतीय अभियान चलाया जा रहा था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Gandhiji did not himself participate in this movement, although he gave it his blessings, as he also did to a peasant satyagraha in Bardoli in the same year.

गांधी जी ने स्वयं इस आंदोलन में भाग नहीं लिया था पर उन्होंने इस आंदोलन को अपना आशीर्वाद दिया था तथा इसी वर्ष बारदोली में होने वाले एक किसान सत्याग्रह के साथ भी उन्होंने एसा किया था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In the end of December 1929, the Congress held its annual session in the city of Lahore.

1929 में दिसंबर के अंत में कांग्रेस ने अपना वार्षिक अधिवेशन लाहौर शहर में किया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

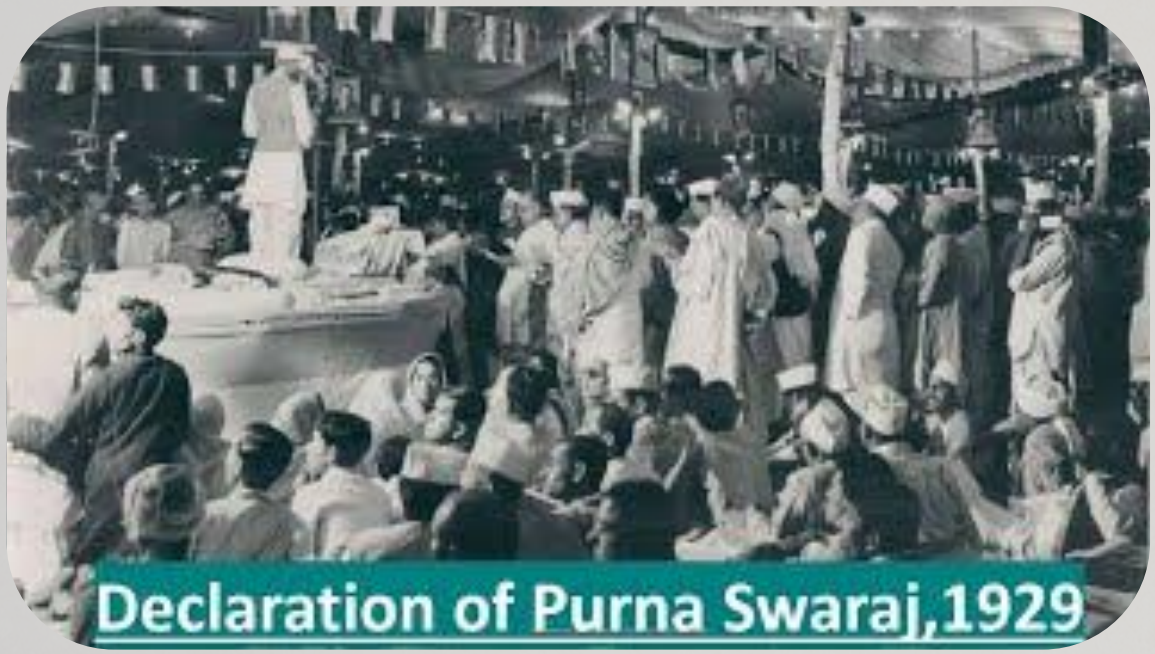

Declaration of Purna Swaraj,1929

The meeting was significant for two things: the election of Jawaharlal Nehru as President, signifying the passing of the baton of leadership to the younger generation; and the proclamation of commitment to "Purna Swaraj", or complete independence.

यह अधिवेशन दो दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण था : जवाहरलाल नेहरू का अध्यक्ष के रूप में चुनाव जो यवा पीढ़ी को नेतृत्व की छड़ी सौंपने का प्रतीक था; और 'पूर्ण स्वराज' अथवा पूर्ण स्वतंत्रता की उद्घोषणा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

On 26 January 1930, "Independence Day" was observed, with the national flag being hoisted in different venues, and patriotic songs being sung.

26 जनवरी 1930 को विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर और देशभक्ति के गीत गाकर 'स्वतंत्रता दिवस' मनाया गया।

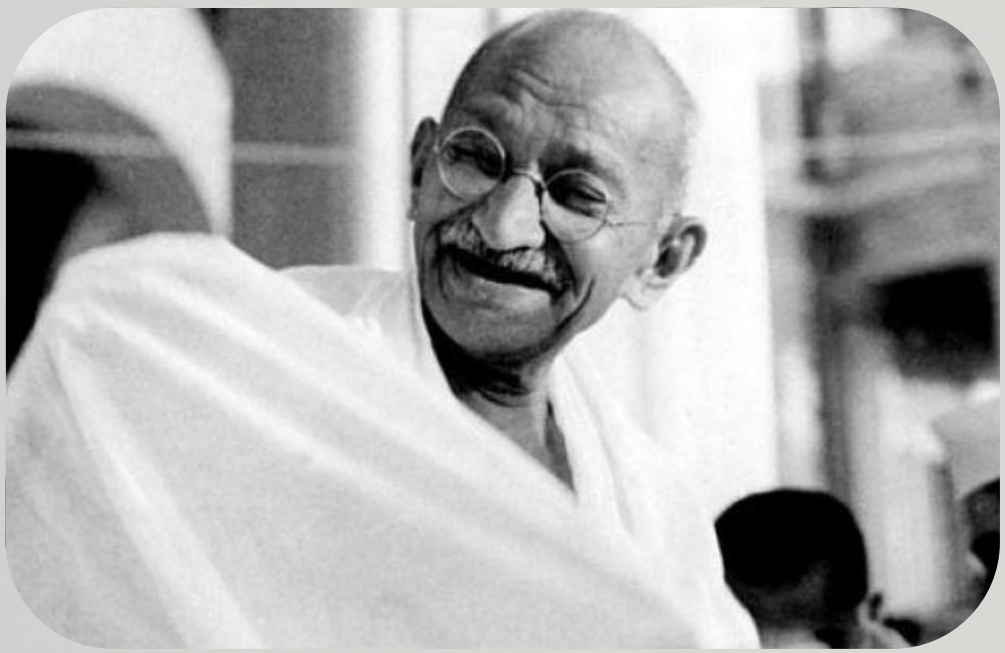

Gandhiji himself issued precise instructions as to how the day should be observed.

गांधी जी ने स्वयं सुस्पष्ट निर्देश देकर बताया कि इस दिन को कैसे मनाया जाना चाहिए।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

"It would be good," he said, "if the declaration [of Independence] is made by whole villages, whole cities even ... It would be well if all the meetings were held at the identical minute in all the places."

उन्होंने कहा कि "यदि (स्वतंत्रता की) उद्घोषणा सभी गाँवों और सभी शहरों यहां तक कि... अच्छा होगा। अगर सभी जगहों पर एक ही समय में संगोष्ठियां हों तो अच्छा होगा।"

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Gandhiji suggested that the time of the meeting be advertised in the traditional way, by the beating of drums. The celebrations would begin with the hoisting of the national flag.

गांधी जी ने सुझाव दिया कि नगाड़े पीटकर पारंपरिक तीरके से संगोष्ठी के समय की घोषणा की जाए। राष्ट्रीय ध्वज को फहराए जाने से समारोहों की शुरुआत होगी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

दाण्डी यात्रा, मार्च 1930

- **Dandi**
- **दाण्डी**

Soon after the observance of this "Independence Day", Mahatma Gandhi announced that he would lead a march to break one of the most widely disliked laws in British India, which gave the state a monopoly in the manufacture and sale of salt.

'स्वतंत्रता दिवस' मनाए जाने के तुरंत बाद महात्मा गांधी ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश भारत के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक, जिसने नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य को एकाधिकार दे दिया है, को तोड़ने के लिए एक यात्रा का नेतृत्व करेंगे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

His picking on the salt monopoly was another illustration of Gandhiji's tactical wisdom. For in every Indian household, salt was indispensable; yet people were forbidden from making salt even for domestic use, compelling them to buy it from shops at a high price.

नमक एकाधिकार के जिस मुद्दे का उन्होंने चयन किया था वह गांधी जी की कुशल समझदारी का एक अन्य उदाहरण था। प्रत्यक भारतीय घर में नमक का प्रयोग अपरिहायं था लेकिन इसके बावजूद उन्हें घरेलू प्रयोग के लिए भी नमक बनाने से रोका गया और इस तरह उन्हें दुकानों से ऊँचे दाम पर नमक खरीदने के लिए बाध्य किया गया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The state monopoly over salt was deeply unpopular; by making it his target, Gandhiji hoped to mobilise a wider discontent against British rule.

नमक पर राज्य का एकाधिपत्य बहुत अलोकप्रिय था। इसी को निशाना बनाते हुए गांधी जी अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ व्यापक असंतोष को संघटित करने की सोच रहे थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Although Gandhiji had given advance notice of his "Salt March" to the Viceroy Lord Irwin, Irwin failed to grasp the significance of the action.

हालाँकि गांधी जी ने अपनी 'नमक यात्रा' की पूर्व सूचना वाइसराय लार्ड इर्विन को दे दी थी किंतु इर्विन उनकी इस कार्रवाही के महत्व को न समझ सके।

6 अप्रैल 1930 को दाण्डी यात्रा की समाप्ति पर सत्याग्रही प्राकृतिक नमक को उठाते हुए।

On 12 March 1930, Gandhiji began walking from his ashram at Sabarmati towards the ocean.

12 मार्च 1930 को गांधी जी ने साबरमती में अपने आश्रम से समुद्र की ओर चलना शुरू किया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

He reached his destination three weeks later, making a fistful of salt as he did and thereby making himself a criminal in the eyes of the law.

तीन हफ्तों बाद वे अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचे। वहां उन्होने मुट्ठी भर नमक बनाकर स्वयं को कानून की निगाह में अपराधी बना दिया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ Why the Salt Satyagraha?

Why was salt the symbol of protest? This is what Mahatma Gandhi wrote:

The volume of information being gained daily shows how wickedly the salt tax has been designed. In order to prevent the use of salt that has not paid the tax which is at times even fourteen times its value, the Government destroys the salt it cannot sell profitably.

❖ नमक सत्याग्रह क्यों?

नमक विरोध का प्रतीक क्यों था? इसके बारे में महात्मा गांधी ने लिखा है :

प्रतिदिन प्राप्त होने वाली सूचनाओं से पता चलता है कि कैसे अन्यायपूर्ण तरीके से नमक कर को तैयार किया गया है। बिना कर (जो कभी-कभी नमक के मूल्य का चौदह गुना तक होता था) अदा किए गए नमक के प्रयोग को रोकने के लिए सरकार उस नमक को, जिससे वह लाभ पर नहीं बेच पाती थी, नष्ट कर देती थी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Thus it taxes the nation's vital necessity; it prevents the public from manufacturing it and destroys what nature manufactures without effort. No adjective is strong enough for characterising this wicked dog-in-the-manger policy. From various sources I hear tales of such wanton destruction of the nation's property in all parts of India.

अत: यह राष्ट की अत्यधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता पर कर लगाती है; यह जनता को इसके उत्पादन से रोकती है और प्रकृति ने जिसे बिना किसी श्रम के उत्पादित किया है उसे नष्ट कर देती है। अत: किसी भी वजह से किसी चीज़ को स्वयं प्रयोग न कर पाने तथा अन्य को भी उसका प्रयोग न करने देने तथा एसे में उस चीज़ को नष्ट कर देने की इस अन्यायपूर्ण नीति को किसी भी विशेषण द्वारा नहीं बताया जा सकता है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Maunds if not tons of salt are said to be destroyed on the Konkan coast. The same tale comes from Dandi. Wherever there is likelihood of natural salt being taken away by the people living in the neighbourhood of such areas for their personal use, salt officers are posted for the sole purpose of carrying on destruction. Thus valuable national property is destroyed at national expense and salt taken out of the mouths of the people.

विभिन्न स्रोतों से मैं भारत के सभी भागों में इस राष्ट संपति को बेलगाम ढंग से नष्ट किए जाने की कहानियां सुन रहा हूँ। टनों न सही पर कई मन नमक कोंकण तट पर नष्ट कर दिया गया बताया गया है। दाण्डी से भी इस तरह की बातें पता चली हैं। जहां कहीं भी एसे क्षेत्रों के आस-पास रहने वाले लोगों द्वारा अपने व्यक्तिगत प्रयोग हेतु प्राकृतिक नमक उठा ले जाने की संभावना दिखती है वहां तुरंत अधिकारी नियुक्त कर दिए जाते हैं जिनका एकमात्र कायं विनाश करना होता है। इस प्रकार बहुमूल्य राष्ट्रीय संपदा को राष्ट्रीय खर्चे से ही नष्ट किया जाता है और लोगों के मु ंह से नमक छीन लिया जाता है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The salt monopoly is thus a fourfold curse. It deprives the people of a valuable easy village industry, involves wanton destruction of property that nature produces in abundance, the destruction itself means more national expenditure, and fourthly, to crown this folly, an unheard-of tax of more than 1,000 per cent is exacted from a starving people.

नमक एकाधिकार एक तरह से चौतरफा अभिशाप है। यह लोगों को बहुमूल्य सुलभ ग्राम उद्योग से वंचित करता है, प्रकृति द्वारा बहुतायत में उत्पादित संपदा का यह अतिशय विनाश करता है। इस विनाश का मतलब ही है और अधिक राष्ट्रीय खर्च। चौथा और इस मूर्खता का चरमोत्कर्ष भूखे लोगों से हज़ार प्रतिशत से अधिक की उगाही है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

This tax has remained so long because of the apathy of the general public. Now that it is sufficiently roused, the tax has to go. How soon it will be abolished depends upon the strength the people.

THE COLLECTED WORKS OF MAHATMA GANDHI (CWMG), VOL. 49

सामान्य जन की उदासीनता की वजह से ही लम्बे समय से यह कर अस्तित्व में बना रहा है। आज जनता पर्याप्त रूप से जग चुकी है अत: इस कर को समाप्त करना होगा। कितनी जल्दी इसे खत्म कर दिया जाएगा यह लोगों की क्षमता पर निर्भर करता है।

दि कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी (सी. डब्ल्य. एम. जी.) खंड **49**

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ **"Tomorrow we shall break the salt tax law"**

On 5 April 1930, Mahatma Gandhi spoke at Dandi: When I left Sabarmati with my companions for this seaside hamlet of Dandi, I was not certain in my mind that we would be allowed to reach this place. Even while I was at Sabarmati there was a rumour that I might be arrested.

❖'कल हम नमक कर क़ानून तोड़ेंगे'

5 अप्रैल **1930** को महात्मा गाँधी ने दाण्डी में कहा था : जब मैं अपने साथियों के साथ दाण्डी के इस समुद्रतटीय टोले की तरफ चला था तो मुझे यकीन नहीं था कि हमें यहां तक आने दिया जाएगा। जब मैं साबरमती में था तब भी यह अफ़वाह थी कि मुझे गिरफ़्तार किया जा सकता है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

I had thought that the Government might perhaps let my party come as far as Dandi, but not me certainly. If someone says that this betrays imperfect faith on my part, I shall not deny the charge. That I have reached here is in no small measure due to the power of peace and non-violence: that power is universally felt. The Government may, if it wishes, congratulate itself on acting as it has done, for it could have arrested every one of us.

तब मैंने सोचा था कि सरकार मेरे साथियों को तो दाण्डी तक आने देगी लेकिन मुझे निश्चय ही यह छूट नहीं मिलेगी। यदि कोई यह कहता कि इससे मेरे हृदय में अपूर्ण आस्था का संकेत मिलता है तो मैं इस आरोप को नकारने वाला नहीं हूँ। मैं यहां तक पहुँचा हूं, इसमें शांति और अहिंसा का कम हाथ नहीं है; इस सत्ता को सब महसूस करते हैं। अगर सरकार चाहे तो वह अपने इस आचरण के लिए अपनी पीठ थपथपा सकती है क्योंकि सरकार चाहती तो हम में से हरेक को गिरफ्तार कर सकती थी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In saying that it did not have the courage to arrest this army of peace, we praise it. It felt ashamed to arrest such an army. He is a civilised man who feels ashamed to do anything which his neighbours would disapprove. The Government deserves to be congratulated on not arresting us, even if it desisted only from fear of world opinion.

जब सरकार यह कहती है कि उसके पास शांति की सेना को गिर.फ्तार करने का साहस नहीं था तो हम उसकी प्रशंसा करते हैं। सरकार को एसी सेना की गिर.फ्तारी में शर्म महसूस होती है। अगर कोई व्यक्ति एसा काम करने में शर्मिंदा महसूस करता है जो उसके पड़ोसियों को भी रास नहीं आ सकता, तो वह एक शिष्ट–सभ्य व्यक्ति है। सरकार को हमें गिर.फ्तार न करने के लिए बधाई दी जानी चाहिए भले ही उसने विश्व जनमत का खयाल करके ही यह फैसला क्यों न लिया हो।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Tomorrow we shall break the salt tax law. Whether the Government will tolerate that is a different question. It may not tolerate it, but it deserves congratulations on the patience and forbearance it has displayed in regard to this party. ...

कल हम नमक कर कानून तोड़ेंगे। सरकार इसको बर्दाश्त करती है कि नहीं, यह सवाल अलग है। हो सकता है सरकार हमें एसा न करने दे लेकिन उसने हमारे जत्थे के बारे में जो धैय और सहिष्णुता दिखायो है उसके लिए वह अभिनंदन की पात्र है...।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

What if I and all the eminent leaders in Gujarat and in the rest of the country are arrested? This movement is based on the faith that when a whole nation is roused and on the march no leader is necessary.

CWMG, VOL. 49

यदि मुझे और गुजरात व देश भर के सारे मुख्य नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया जाता है तो क्या होगा? यह आंदोलन इस विश्वास पर आधारित है कि जब एक पूरा राष्ट उठ खड़ा होता है और आगे बढ़ने लगता है तो उसे नेता की जरूरत नहीं रह जाती।

कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी, खंड **49**

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

As with Non-cooperation, apart from the officially sanctioned nationalist campaign, there were numerous other streams of protest.

असहयोग आन्दोलन की तरह अधिकृत रूप से स्वीकृत राष्ट्रीय अभियान के अलावा भी विरोध की असंख्य धाराएँ थीं।

In some towns, factory workers went on strike while lawyers boycotted British courts and students refused to attend government-run educational institutions.

कुछ कस्बों में फैक्ट्री कामगार हड़ताल पर चले गए, वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार कर दिया और विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षा संस्थानों में पढ़ने से इनकार कर दिया।

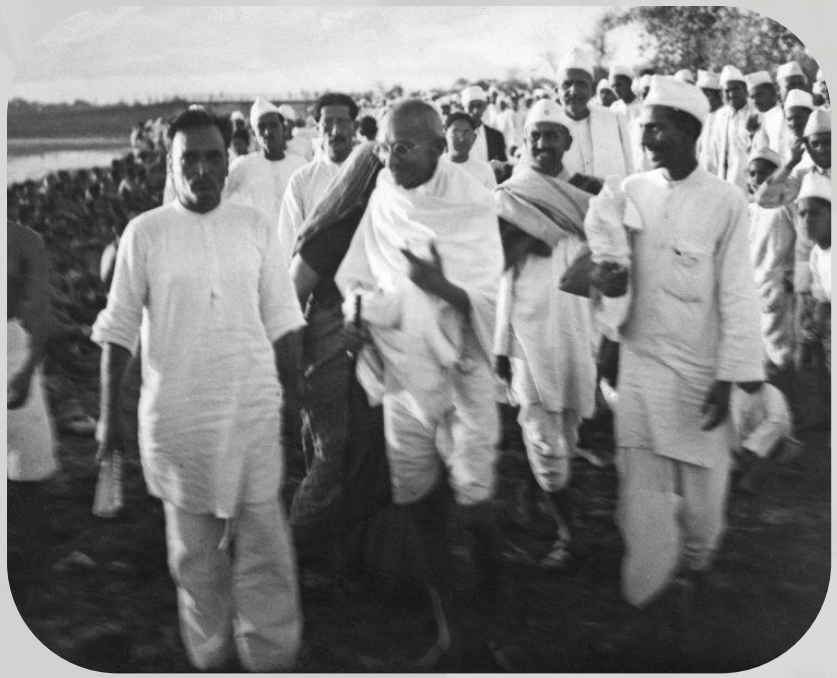

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

As in 1920-22, now too Gandhiji's call had encouraged Indians of all classes to make manifest their own discontent with colonial rule. The rulers responded by detaining the dissenters. In the wake of the Salt March, nearly 60,000 Indians were arrested, among them, of course, Gandhiji himself.

1920 - 22 की तरह इस बार भी गाँधी जी के आह्वान ने तमाम भारतीय वगों को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अपना असंतोष व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया। जवाब में सरकार असंतुष्टों को हिरासत में लेने लगी। नमक सत्याग्रह के सिलसिले में लगभग **60,000** लोगों को गिर.फ्तार किया गया। गिरफ्तार होने वालों में गाँधी जी भी थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The progress of Gandhiji's march to the seashore can be traced from the secret reports filed by the police officials deputed to monitor his movements.

समुद्र तट की ओर गाँधी जी की यात्रा की प्रगति का पता उनकी गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए तैनात पुलिस अफसरों द्वारा भेजी गई गोपनीय रिपोटों से लगाया जा सकता है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

These reproduce the speeches he gave at the villages en route, in which he called upon local officials to renounce government employment and join the freedom struggle.

इन रिपोर्टों में रास्ते के गाँवों में गाँधी जी द्वारा दिए गए भाषण भी मिलते हैं जिनमें उन्होंने स्थानीय अधिकारियों से आह्वान किया था कि वे सरकारी नौकरियां छोड़कर स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल हो जाएँ।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In one village, Wasna, Gandhiji told the upper castes that "if you are out for Swaraj you must serve untouchables. You won't get Swaraj merely by the repeal of the salt taxes or other taxes.

वसना नामक गाँव में गाँधी जी ने ऊँची जाति वालों को संबोधित करते हुए कहा था कि "यदि आप स्वराज के हक में आवाज़ उठाते हैं तो आपको अछूतों की सेवा करनी पड़ेगी। सिर्फ नमक कर या अन्य करों के खत्म हो जाने से आपको स्वराज नहीं मिल जाएगा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

For Swaraj you must make amends for the wrongs which you did to the untouchables. For Swaraj, Hindus, Muslims, Parsis and Sikhs will have to unite. These are the steps towards Swaraj."

स्वराज के लिए आपको अपनी उन गल्तियों का प्रायश्चित करना होगा जो आपने अछूतों के साथ की हैं। स्वराज के लिए हिंदू, मुसलमान, पारसी और सिख, सबको एकजुट होना पडेगा। य स्वराज की सीढ़ियाँ है।

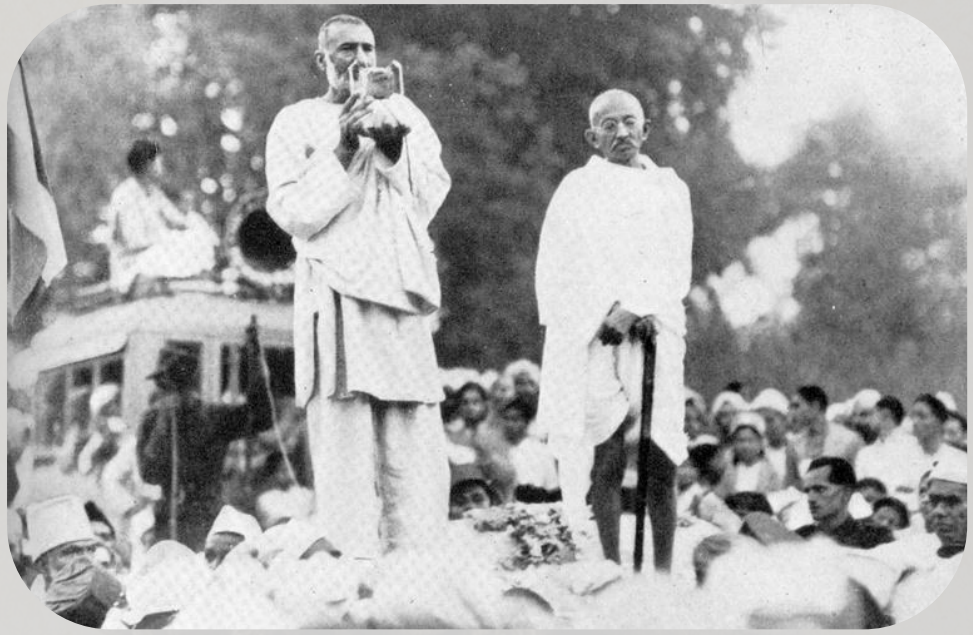

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The police spies reported that Gandhiji's meetings were very well attended, by villagers of all castes, and by women as well as men.

"पुलिस के जासूसों ने अपनी रिपोटों में लिखा था कि गाँधी जी की सभाओं में तमाम जातियों के औरत-मर्द शामिल हो रहे हैं।

Writing to the government, the District Superintendent of Police remarked, "Mr Gandhi appeared calm and collected.

सरकार को भेजी अपनी रिपोर्ट में जिला पुलिस सुपरिंटेंडेंट (पुलिस अधीक्षक) ने लिखा था कि "श्री गाँधी शांत और निश्चिंत दिखाई दिए।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

THE BURLINGTON HAWK-EYE. SUNDAY MORNING, SEPTEMBER 20, 1931.

Most Talked About Man *in the* World

Mahatma Gandhi

IS HE Benito Mussolini, Prince of Wales, Herbert Hoover, Albert Einstein, Max Schmeling or Rudy Vallee? The Answer Is

VIRTUALLY an exile in the land of his birth, yet he is a dictator controlling the destinies of millions.

The American newsmagazine, Time.

अमेरिकी समाचार पत्रिका टाइम

Thus in its first report on the march, Time was deeply sceptical of the Salt March reaching its destination.

इस यात्रा के बारे में अपनी पहली रिपोर्ट में ही टाइम ने नमक यात्रा के मंजिल तक पहुँचने पर अपनी गहरी शंका व्यक्त कर दी थी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

It claimed that Gandhiji "sank to the ground" at the end of the second day's walking; the magazine did not believe that "the emaciated saint would be physically able to go much further". But within a week it had changed its mind.

उसने दावा किया कि दूसरे दिन पैदल चलने के बाद गाँधी जी "ज़मीन पर पसर गए थे।" पत्रिका को इस बात पर विश्वास नहीं था कि इस "मरियल साधु के शरीर में और आगे जाने की ताकत बची है।" लेकिन एक हफ्ते . में ही पत्रिका की सोच बदल गई।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The massive popular following that the march had garnered, wrote Time, had made the British rulers "desperately anxious".

टाइम ने लिखा कि इस यात्रा को जो भारी जनसमर्थन मिल रहा है उसने अंग्रेज़ शासकों को "ग़हरे तौर पर बेचैन" कर दिया है।

Gandhiji himself they now saluted as a "Saint" and "Statesman", who was using "Christian acts as a weapon against men with Christian beliefs".

अब वे भी गाँधी जी को एसा "साधु" और "राजनेता" कह कर सलामी देने लगे हैं जो "ईसाई धर्मावलंबियों के खिलाफ ईसाई तरीकों का ही हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है।"

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖The problem with separate electorates

At the Round Table Conference Mahatma Gandhi stated his arguments against separate electorates for the Depressed Classes:

Separate electorates to the "Untouchables" will ensure them bondage in perpetuity ... Do you want the "Untouchables" to remain "Untouchables" for ever?

❖ पृथक निर्वाचिका के बारे में समस्या

गोल मेज सम्मेलन के दौरान महात्मा गाँधी ने दमित वगों के लिए पृथक निर्वाचिका प्रस्ताव के ख़िलाप ़ अपनी दलील पेश करते हुए कहा था : "अस्पृश्यों" के लिए पृथक निर्वाचिका का प्रावधान करने से उनकी दासता स्थायो रूप ले लेगी...। क्या आप चाहते हैं कि "अस्पश्य" हमेशा "अस्पश्य" ही बने रहें?

Well, the separate electorates would perpetuate the stigma. What is needed is destruction of "Untouchability", and when you have done it, the barsinister, which has been imposed by an insolent "superior" class upon an "inferior" class will be destroyed. When you have destroyed the barsinister to whom will you give the separate electorates?

पृथक निर्वाचिका से उनके प्रति कलंक का यह भाव और मजबूत हो जाएगा। जरूरत इस बात की है कि "अस्पृश्यता" का विनाश किया जाए और जब आप यह लक्ष्य प्राप्त कर लें तो एक अडियल "श्रेष्ठ" वर्ग द्वारा एक "कमतर" वर्ग पर थोप दी गई यह अवैध व्यवस्था भी समाप्त हो जाएगी। जब आप इस अवैध प्रथा को नष्ट कर देंगे तो किसी को पृथक निर्वाचिका की आवश्यकता ही कहां रह जाएगी?

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ **Dialogues**

❖ **संवाद**

The Salt March was notable for at least three reasons. First, it was this event that first brought Mahatma Gandhi to world attention. The march was widely covered by the European and American press.

नमक यात्रा कम से कम तीन कारणों से उल्लेखनीय थी। पहला, यही वह घटना थी जिसके चलते महात्मा गाँधी दुनिया की नजर में आए। इस यात्रा को यूरोप और अमेरिकी प्रेस ने व्यापक कवरेज दी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Second, it was the first nationalist activity in which women participated in large numbers. The socialist activist Kamaladevi Chattopadhyay had persuaded Gandhiji not to restrict the protests to men alone. Kamaladevi was herself one of numerous women who courted arrest by breaking the salt or liquor laws.

दूसरे, यह पहली राष्ट्रवादी गतिविधि थी जिसमें औरतों ने भी बढ़-चाया कि वे अपने आंदोलनों को पुरुषों तक ही सीमित न रखें। कमलादेवी खुद उन असंख्य औरतों में से एक थीं जिन्होंने नमक या शराब कानूनों का उल्लंघन करते हुए सामूहिक गिरफ़्तारी दी थी।

6 अप्रैल 1930 को दाण्डी यात्रा की समाप्ति पर सत्याग्रही प्राकृतिक नमक को उठाते हुए।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Third, and perhaps most significant, it was the Salt March which forced upon the British the realisation that their Raj would not last forever, and that they would have to devolve some power to the Indians.

तीसरा और संभवत: सबसे महत्वपूर्ण कारण यह था कि नमक यात्रा के कारण ही अंग्रेजों को यह अहसास हुआ था कि अब उनका राज बहुत दिन नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

To that end, the British government convened a series of "Round Table Conferences" in London. The first meeting was held in November 1930, but without the pre-eminent political leader in India, thus rendering it an exercise in futility.

इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने लंदन में "गोल मेज सम्मेलनों" का आयोजन शुरू किया। पहला गोल मेज सम्मेलन नवम्बर **1930** में आयोजित किया गया जिसमें देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। इसी कारण अंततः यह बैठक निरर्थक साबित हुई।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Gandhiji was released from jail in January 1931 and the following month had several long meetings with the Viceroy.

जनवरी **1931** में गाँधी जी को जेल से रिहा किया गया। अगले ही महीने वायसराय के साथ उनकी कई लंबी बैठकें हुईं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

These culminated in what was called the "Gandhi-Irwin Pact', by the terms of which civil disobedience would be called off, all prisoners released, and salt manufacture allowed along the coast.

इन्हीं बैठकों के बाद "गाँधी–इर्विन समझौते" पर सहमति बनी जिसकी शतों में सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेना, सारे कैदियों की रिहाई और तटीय इलाकों में नमक उत्पादन की अनुमति देना शामिल था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

A second Round Table Conference was held in London in the latter part of 1931. Here, Gandhiji represented the Congress.

दूसरा गोल मेज सम्मेलन **1931** के आखिर में लंदन में आयोजित हुआ। उसमें गाँधी जी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे।

दूसरा गोल मेज सम्मेलन, लंदन, नवंबर 1931

महात्मा गाँधी ने "निम्न जातियों" के लिए पृथक निर्वाचिका की माँग का विरोध किया। उनका मानना था कि ऐसा करने पर समाज की मुख्यधारा में उनका एकीकरण नहीं हो पाएगा और वे सवर्ण हिंदुओं से हमेशा के लिए अलग रह जाएँगे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

However, his claims that his party represented all of India came under challenge from three parties: from the Muslim League, which claimed to stand for the interests of the Muslim minority;

गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। इस दावे को तीन पार्टियों ने चुनौती दी। मुस्लिम लीग का कहना था कि वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

from the Princes, who claimed that the Congress had no stake in their territories; and from the brilliant lawyer and thinker B.R. Ambedkar, who argued that Gandhiji and the Congress did not really represent the lowest castes.

राजे-रजवाड़ों का दावा था कि कांग्रेस का उनके नियंत्रण वाले भूभाग पर कोई अधिकार नहीं है। तीसरी चुनौती तेज़-तर्रार वकील और विचारक बीआर. अंबेडकर की तरफ़ से थी जिनका कहना था कि गाँधी जी और कांग्रेस पार्टी निचली जातियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The new Viceroy, Lord Willingdon, was deeply unsympathetic to the Indian leader. In a private letter to his sister, Willingdon wrote: "It's a beautiful world if it wasn't for Gandhi ...

नए वायसराय लॉर्ड विलिंग्डन को गाँधी जी से बिलकुल हमदर्दी नहीं थी। अपनी बहन को लिखे एक निजी खत में विलिंग्डन ने लिखा था कि "अगर गाँधी न होता तो यह दुनिया वाकई बहुत खूबसूरत होती।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

At the bottom of every move he makes which he always says is inspired by God, one discovers the political manouevre.

वह जो भी कदम उठाता है उसे ईश्वर की प्रेरणा का परिणाम कहता है लेकिन असल में उसके पीछे एक गहरी राजनीतिक चाल होती है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

I see the American Press is saying what a wonderful man he is ... But the fact is that we live in the midst of very unpractical, mystical, and superstitious folk who look upon Gandhi as something holy, ..."

देखता हूं कि अमेरिकी प्रेस उसको गज़ब का आदमी बताती है...। लेकिन सच यह है कि हम निहायत अव्यावहारिक, रहस्यवादी और अंधविश्वासी जनता के बीच रह रहे हैं जो गाँधी को भगवान मान बैठी है,..."

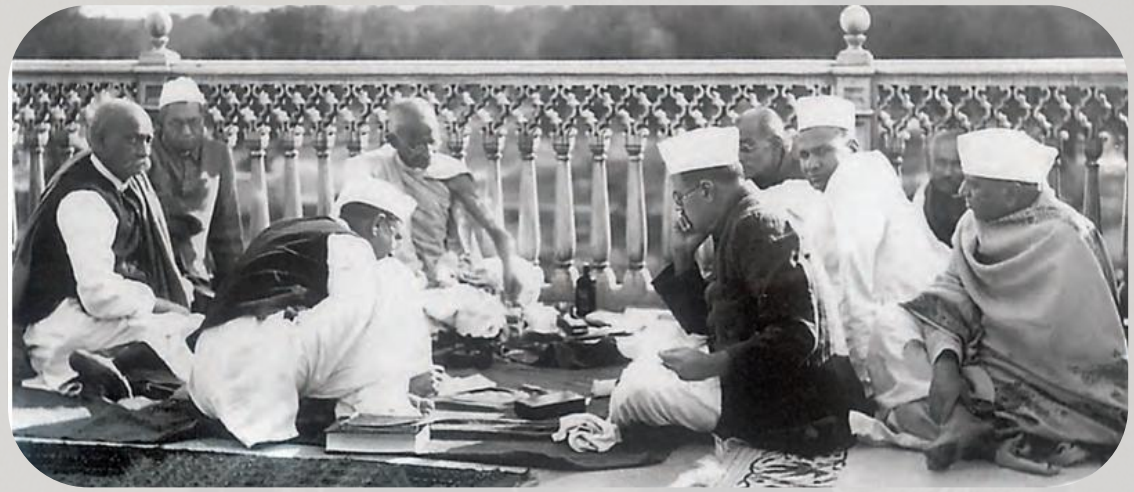

जनवरी 1931 में जेल से महात्मा गाँधी की रिहाई के बाद आंदोलन की भावी योजना के बारे में चर्चा करने के लिए इलाहाबाद में कांग्रेस के नेताओं की बैठक हुई थी।

इस चित्र में आप (दाएँ से बाएँ) जवाहरलाल नेहरू, जमनालाल बजाज, सुभाष चंद्र बोस, गाँधी जी, महादेव देसाई (अग्रभाग में), सरदार वल्लभ भाई पटेल को देख सकते हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In 1935, however, a new Government of India Act promised some form of representative government. Two years later, in an election held on the basis of a restricted franchise, the Congress won a comprehensive victory.

बहरहाल, **1935** में नए गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया एक्ट में सीमित प्रातिनिधिक शासन व्यवस्था का आश्वासन व्यक्त किया गया। दो साल बाद सीमित मताधिकार के आधार पर हुए चुनावों में कांग्रेस को जबर्दस्त सफलता मिली।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In September 1939, two years after the Congress ministries assumed office, the Second World War broke out. Mahatma Gandhi and Jawaharlal Nehru had both been strongly critical of Hitler and the Nazis.

कांग्रेस मंत्रिमंडलों के सत्ता में आने के दो साल बाद, सितंबर **1939** में दूसरा विश्व य,द्ध शुरू हो गया। महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू, दोनों ही हिटलर व नात्सियों के कट्टर आलोचक थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

महात्मा गाँधी और राजेन्द्र प्रसाद वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो के साथ बैठक के लिए जाते हुए, 13 अक्टूबर 1939

इस बैठक में युद्ध में भारत की हिस्सेदारी के स्वरूप पर चर्चा की गई थी। जब वायसराय के साथ वार्ता टूट गई तो कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इस्तीफ़ा दे दिया था।

Accordingly, they promised Congress support to the war effort if the British, in return, promised to grant India independence once hostilities ended. The offer was refused. In protest, the Congress ministries resigned in October 1939.

तदनुरूप, उन्होंने फैसला लिया कि अगर अंग्रेज़ यु्द्ध समाप्त होने के बाद भारत को स्वतंत्रता देने पर राजी हों तो कांग्रेस उनके यु्द्ध प्रयासों में सहायता दे सकती है। सरकार ने उनका प्रस्ताव ख़ारिज कर दिया। इसके विरोध में कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने अक्टूबर **1939** में इस्तीफ़ा दे दिया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

in March 1940, the Muslim League passed a resolution demanding a measure of autonomy for the Muslim-majority areas of the subcontinent.

मार्च **1940** में मुस्लिम लीग ने उपमहाद्वीप के मुस्लिम-बहुल इलाक़ों के लिए कुछ स्वायत्तता की माँग का प्रस्ताव पेश किया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

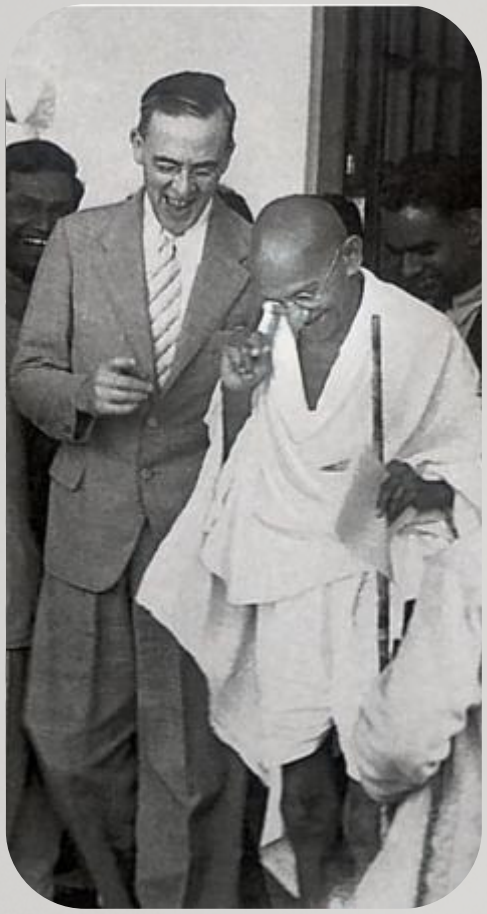

स्टेफ़र्ड क्रिप्स के साथ महात्मा गाँधी, मार्च 1942

At this time Britain had an all-party government, whose Labour members were sympathetic to Indian aspirations, but whose Conservative Prime Minister, Winston Churchill, was a diehard imperialist who insisted that he had not been appointed the King's First Minister in order to preside over the liquidation of the British Empire.

इसी समय ब्रिटेन में एक सर्वदलीय सरकार सत्ता में थी जिसमें शामिल लेबर पार्टी के सदस्य भारतीय आकांक्षाओं के प्रति हमदर्दी का रवैया रखते थे लेकिन सरकार के मुखिया प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल कट्टर साम्राज्यवादी थे। उनका कहना था कि उन्हें सम्राट का सर्वोच्च मंत्री इसलिए नहीं नियुक्त किया गया है कि वह ब्रिटिश साम्राज्य को टुकड़े-टुकड़े कर दें।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ Ambedkar on separate electorates

In response to Mahatma Gandhi's opposition to the demand for separate electorates for the Depressed Classes, Ambedkar wrote:

Here is a class which is undoubtedly not in a position to sustain itself in the struggle for existence

❖ पृथक निर्वाचिका पर अम्बेडकर के विचार

दमित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचिका के प्रस्ताव पर महात्मा गाँधी की दलीलों के जवाब में अम्बेडकर ने लिखा था :

'हमारे सामने एक एसा वर्ग है जो निश्चय ही अस्तित्व के संघर्ष में खुद को कायम नहीं रख सकता।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The religion, to which they are tied, instead of providing them an honourable place, brands them as lepers, not fit for ordinary intercourse. Economically, it is a class entirely dependent upon the high-caste Hindus for earning its daily bread with no independent way of living open to it.

जिस धर्म से य लोग बँधे हुए हैं वह उन्हें सम्मानजनक स्थान प्रदान करने की बजाय कोढ़ियों की तरह देखता है जिनके साथ सामान्य संबंध नहीं रखे जा सकते। आर्थिक रूप से यह एसा वर्ग है जो दो वक्त की रोटी के लिए सवर्ण हिंदुओं पर पूरी तरह आश्रित है; जिसके पास आजीविका का कोई स्वतंत्र साधन नहीं है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Nor are all ways closed by reason of the social prejudices of the Hindus but there is a definite attempt all through our Hindu Society to bolt every possible door so as not to allow the Depressed Classes any opportunity to rise in the scale of life.

न केवल हिंदुओं के सामाजिक पूर्वाग्रहों के कारण उनके सारे रास्ते बंद हैं बल्कि समग्र इतिहास में हिंदू समाज ने उनके सामने खुलने वाली हर संभावना को बंद कर दिया है जिससे दमित वर्गों को जीवन में ऊपर उठने का कोई अवसर न मिल सके।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In these circumstances, it would be granted by all fairminded persons that as the only path for a community so handicapped to succeed in the struggle for life against organised tyranny, some share of political power in order that it may protect itself is a paramount necessity ...

FROM DR BABASAHEB AMBEDKAR, "WHAT CONGRESS AND GANDHI HAVE DONE TO THE UNTOUCHABLES", WRITINGS AND SPEECHES, VOL. 9, P. 312

इन परिस्थितियों में सभी निष्पक्ष सोच वाले व्यक्ति इस बात पर सहमत होंगे कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि एसे अपंग समुदाय के पास संगठित निरंकुशता के विरुद्ध जीवन के संघर्ष का एकमात्र रास्ता यही है कि उसे राजनीतिक सत्ता में हिस्सा मिले जिससे वह अपनी रक्षा कर सके...।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, "व्हाट कांग्रेस एंड गाँधी हैव डन टू दि अनटचेबल्स", राइटिंग्स एड स्पीचे ं स, खंड 9, प. 312 से।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

- **Quit India**
- **भारत छोड़ो**

This was the "Quit India" campaign, which began in August 1942.

1942 में शुरू हुए इस आंदोलन को "अंग्रेज़ों भारत छोड़ो" का नाम दिया गया था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In several districts, such as Satara in the west and Medinipur in the east, "independent" governments were proclaimed. The British responded with much force, yet it took more than a year to suppress the rebellion.

पश्चिम में सतारा और पूर्व में मेदिनीपुर जैसे कई जिलों में "स्वतंत्र" सरकार (प्रतिसरकार) की स्थापना कर दी गई थी। अंग्रेज़ों ने आंदोलन के प्रति काफी सख्त रवैया अपनाया फिर भी इस विद्रोह को दबाने में सरकार को साल भर से ज्यादा समय लग गया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

"Quit India" was genuinely a mass movement, bringing into its ambit hundreds of thousands of ordinary Indians.

"भारत छोड़ो" (**Quit India**) आंदोलन सही मायने में एक जनांदोलन था जिसमें लाखों आम हिंदुस्तानी शामिल थे। इस आंदोलन ने य़वाओं को बड़ी संख्या में अपनी ओर आकर्षित किया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

It especially energised the young who, in very large numbers, left their colleges to go to jail. However, while the Congress leaders languished in jail, Jinnah and his colleagues in the Muslim League worked patiently at expanding their influence. It was in these years that the League began to make a mark in the Punjab and Sind, provinces where it had previously had scarcely any presence.

उन्होंने अपने कॉलेज छोड़कर जेल का रास्ता अपनाया। जिस दौरान कांग्रेस के नेता जेल में थे उसी समय जिन्ना तथा मुस्लिम लीग के उनके साथी अपना प्रभाव क्षेत्र फैलाने में लगे थे। इन्हीं सालों में लीग को पंजाब और सिंध में अपनी पहचान बनाने का मौका मिला जहां अभी तक उसका कोई खास वजूद नहीं था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

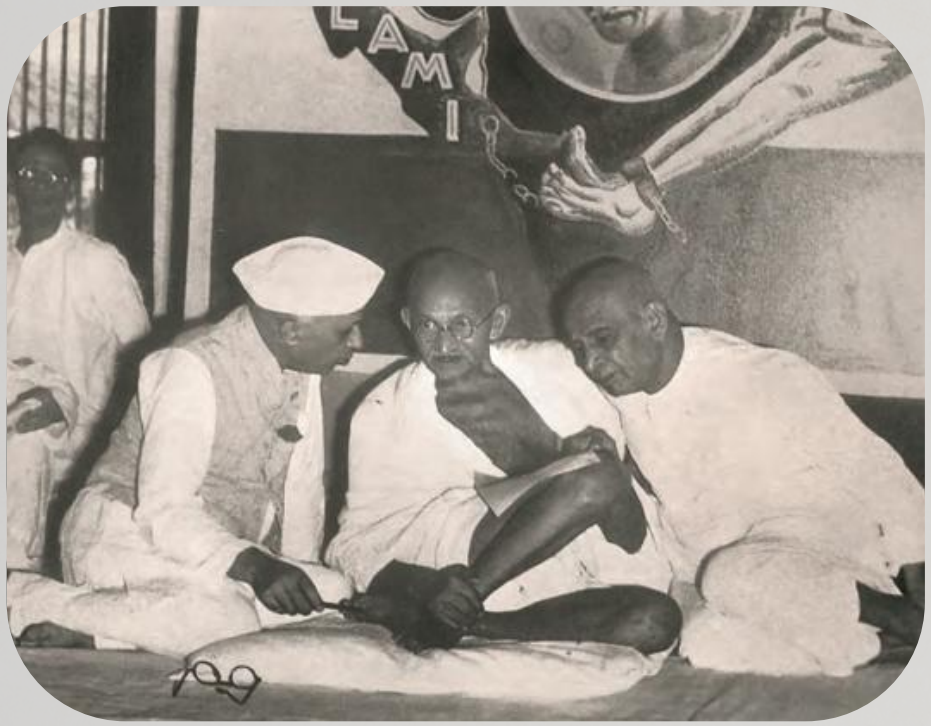

दायीं ओर जवाहरलाल नेहरू तथा बायीं ओर बैठे सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ विचार-विमर्श करते महात्मा गाँधी।

नेहरू और पटेल कांग्रेस के भीतर दो अलग राजनीतिक प्रवृत्तियों – समाजवादी और रूढ़िवादी – का प्रतिनिधित्व करते थे। महात्मा गाँधी को अकसर इन दोनों समूहों के बीच मध्यस्थता करनी पड़ती थी।

Later that year he held a series of meetings with Jinnah, seeking to bridge the gap between the Congress and the League. In 1945, a Labour government came to power in Britain and committed itself to granting independence to India.

जेल से निकलने के बाद उन्होंने कांग्रेस और लीग के बीच फासले को पाटने के लिए जिन्ना के साथ कई बार बात की। **1945** में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी। यह सरकार भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ **Satara, 1943**

From the late nineteenth century, a non-Brahman movement, which opposed the caste system and landlordism, had developed in Maharashtra. This movement established links with the national movement by the 1930s.

❖ **सतारा, 1943**

उन्नीसवीं सदी के आखिर से जाति व्यवस्था और जमींदारी के खिलाफ महाराष्ट्र में एक गैर-ब्राह्मण आंदोलन विकसित हो चुका था। इस आंदोलन ने **1930** के दशक तक राष्ट्रवादी आंदोलन के साथ संबंध स्थापित कर दिया था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In 1943, some of the younger leaders in the Satara district of Maharashtra set up a parallel government (prati sarkar), with volunteer corps (seba dals) and village units (tufan dals).

1943 में महाराष्ट्र के सतारा जिले के कुछ य़ुवा नेताओं ने सेवा दलों तथा तूफान दलों (ग्राम इकाई) के साथ मिलकर एक प्रतिसरकार (समानांतर सरकार) की स्थापना कर ली थी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

They ran people's courts and organised constructive work. Dominated by kunbi peasants and supported by dalits, the Satara prati sarkar functioned till the elections of 1946, despite government repression and, in the later stages, Congress disapproval.

उन्होंने जन–अदालतों का आयोजन किया तथा रचनात्मक कायं किए। कुनबी किसानों के दबदबे और दलितों के सहयोग से चलने वाली सतारा प्रतिसरकार, सरकारी दमन तथा अंतिम दौर में कांग्रेस की असहमति के बावजूद 1946 के चुनावों तक चलती रही।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Early in 1946 fresh elections were held to the provincial legislatures.

1946 की शुरुआत में प्रांतीय विधान मंडलों के लिए नए सिरे से चुनाव कराए गए।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The political polarisation was complete. A Cabinet Mission sent in the summer of 1946 failed to get the Congress and the League to agree on a federal system that would keep India together while allowing the provinces a degree of autonomy.

राजनीतिक ध्रुवीकरण पूरा हो चुका था। 1946 की गर्मियों में कैबिनेट मिशन भारत आया। इस मिशन ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग को एक एसी संघीय व्यवस्था पर राज़ी करने का प्रयास किया जिसमें भारत के भीतर विभिन्न प्रांतों को सीमित स्वायत्तता दी जा सकती थी। कैबिनेट मिशन का यह प्रयास भी विफल रहा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

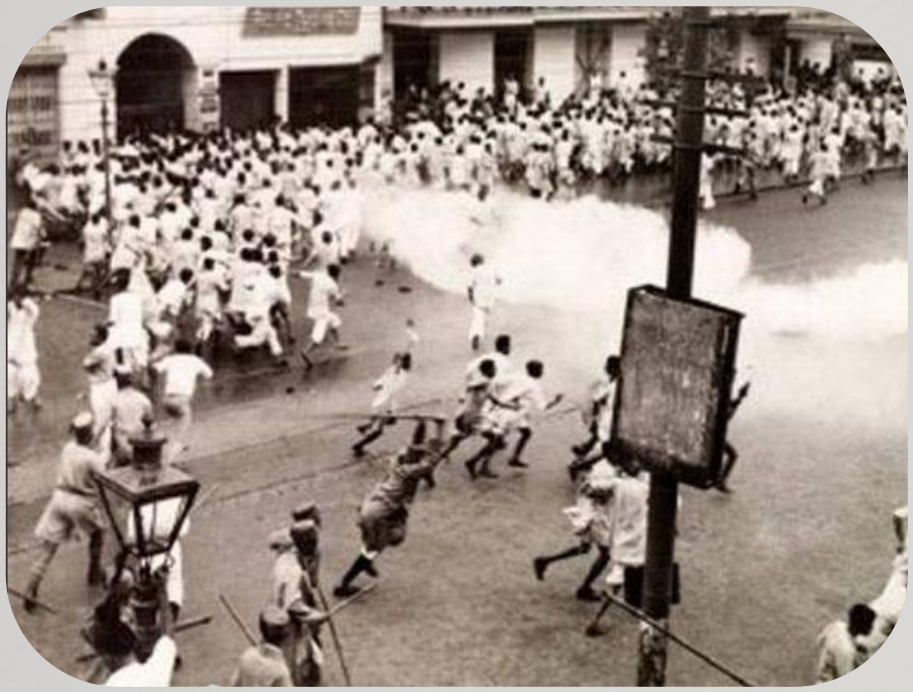

After the talks broke down, Jinnah called for a "Direct Action Day" to press the League's demand for Pakistan. On the designated day, 16 August 1946, bloody riots broke out in Calcutta. The violence spread to rural Bengal, then to Bihar, and then across the country to the United Provinces and the Punjab.

वार्ता टूट जाने के बाद जिन्ना ने पाकिस्तान की स्थापना के लिए लीग की माँग के समर्थन में एक "प्रत्यक्ष कायंवाही दिवस" का आह्वान किया। इसके लिए **16** अगस्त, **1946** का दिन तय किया गया था। उसी दिन कलकत्ता में खूनी संघर्ष शुरू हो गया। यह हिंसा कलकत्ता से शुरू होकर ग्रामीण बंगाल, बिहार और संयुक्त प्रांत व पंजाब तक फैल गई।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

In February 1947, Wavell was replaced as Viceroy by Lord Mountbatten. Mountbatten called onelast round of talks, but when these too proved inconclusive he announced that British India would be freed, but also divided.

फरवरी 1947 में वावेल की जगह लॉर्ड माउंटबेटन को वायसराय नियुक्त किया गया। उन्होंने वार्ताओं के एक अंतिम दौर का आह्वान किया। जब सुलह के लिए उनका यह प्रयास भी विफल हो गया तो उन्होंने एलान कर दिया कि ब्रिटिश भारत को स्वतंत्रता दे दी जाएगी लेकिन उसका विभाजन भी होगा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The formal transfer of power was fixed for 15 August. When that day came, it was celebrated with gusto in different parts of India. In Delhi, there was "prolonged applause" when the President of the Constituent Assembly began the meeting by invoking the Father of the Nation – Mohandas Karamchand Gandhi.

औपचारिक सत्ता हस्तांतरण के लिए **15** अगस्त का दिन नियत किया गया। उस दिन भारत के विभिन्न भागों में लोगों ने जमकर खुशियां मनायों। दिल्ली में जब संविधान सभा के अध्यक्ष ने मोहनदास करमचंद गाँधी को राष्ट्रपिता की उपाधि देते हुए संविधान सभा की बैठक शुरू की तो "बहुत देर तक करतल ध्वनि" होती रही।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖The Last Heroic Days

❖ आखिरी, बहादुराना दिन

Mahatma Gandhi was not present at the festivities in the capital on 15 August 1947. He was in Calcutta, but he did not attend any function or hoist a flag there either. Gandhiji marked the day with a 24-hour fast.

15 अगस्त **1947** को राजधानी में हो रहे उत्सवों में महात्मा गाँधी नहीं थे। उस समय वे कलकत्ता में थे लेकिन उन्होंने वहां भी न तो किसी कायंक्रम में हिस्सा लिया, न ही कहीं झंडा फहराया। गाँधी जी उस दिन **24** घंटे के उपवास पर थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

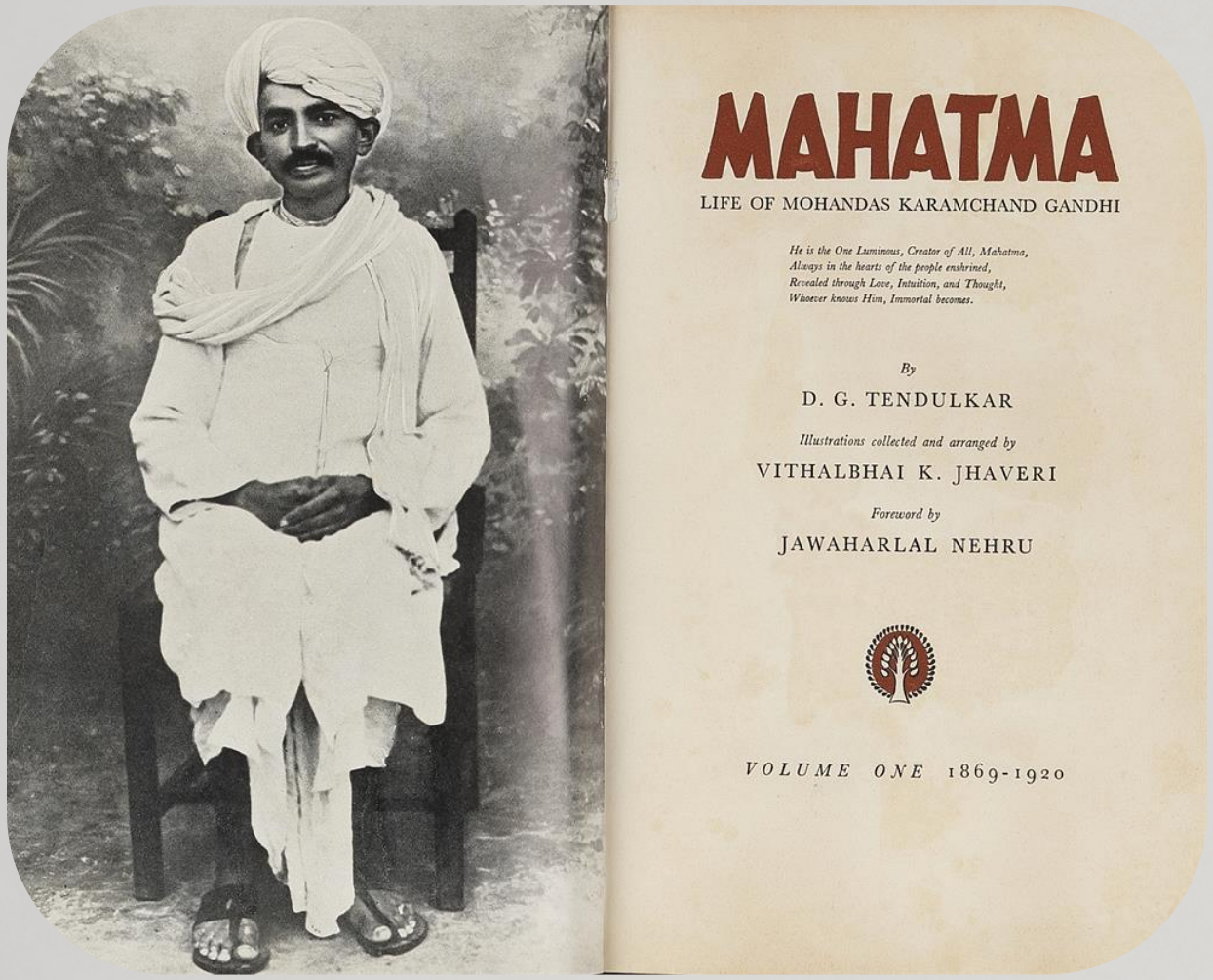

Through September and October, writes his biographer D.G. Tendulkar, Gandhiji "went round hospitals and refugee camps giving consolation to distressed people".

उनके जीवनी लेखक डी.जी. तेंदुलकर ने लिखा है कि सितंबर और अक्तूबर के दौरान गाँधी जी "पीड़ितों को सांत्वना देते हुए अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों के चक्कर लगा रहे थे।"

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

At the initiative of Gandhiji and Nehru, the Congress now passed a resolution on "the rights of minorities".

गाँधी जी और नेहरू के आग्रह पर कांग्रेस ने "अल्पसंख्यकों के अधिकारों" पर एक प्रस्ताव पारित कर दिया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The party had never accepted the "two-nation theory": forced against its will to accept Partition, it still believed that "India is a land of many religions and many races, and must remain so".

कांग्रेस ने "दो राष्ट सिद्धांत" को कभी स्वीकार नहीं किया था। जब उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध बँटवारे पर मंजूरी देनी पड़ी तो भी उसका दृढ़ विश्वास था कि "भारत बहुत सारे धर्मों और बहुत सारी नस्लों का देश है और उसे एसे ही बनाए रखा जाना चाहिए।"

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Whatever be the situation in Pakistan, India would be "a democratic secular State where all citizens enjoy full rights and are equally entitled to the protection of the State, irrespective of the religion to which they belong".

पाकिस्तान में हालात जो रहें, भारत "एक लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट होगा जहां सभी नागरिकों को पूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे तथा धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना सभी को राज्य की ओर से संरक्षण का अधिकार होगा।"

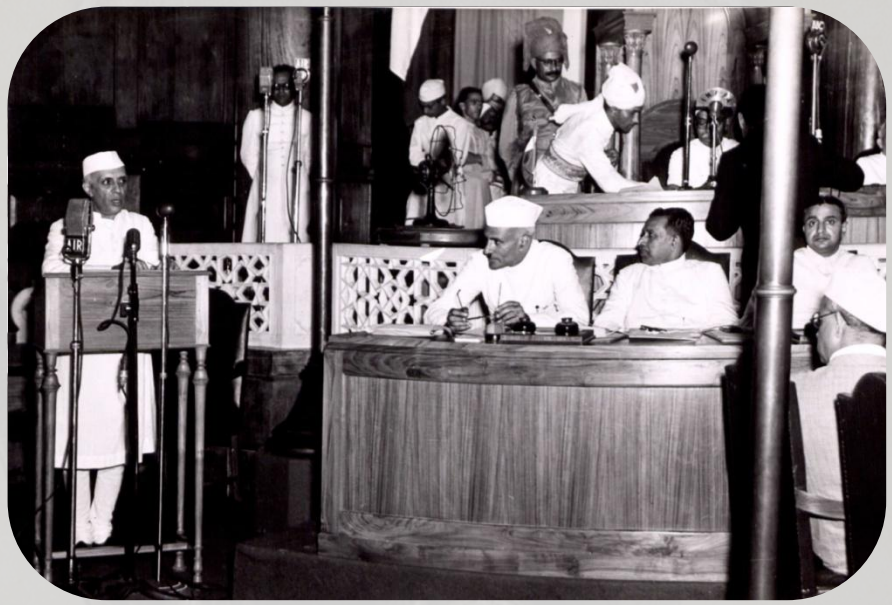

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

एक दंगाग्रस्त गाँव में जाते हुए महात्मा गाँधी, 1947

Many scholars have written of the months after Independence as being Gandhiji's "finest hour". After working to bring peace to Bengal, Gandhiji now shifted to Delhi, from where he hoped to move on to the riottorn districts of Punjab.

बहुत सारे विद्वानों ने स्वतंत्रता बाद के महीनों को गाँधी जी के जीवन का "श्रेष्ठतम क्षण" कहा है। बंगाल में शांति स्थापना के लिए अभियान चलाने के बाद गाँधी जी दिल्ली आ गए। यहां से वे दंगाग्रस्त पंजाब के जिलों में जाना चाहते थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Gandhiji had fought a lifelong battle for a free and united India; and yet, when the country was divided, he urged that the two parts respect and befriend one another.

गाँधी जी ने स्वतंत्र और अखंड भारत के लिए जीवन भर यद्ध लड़ा। फिर भी, जब देश विभाजित हो गया तो उनकी यही इच्छा थी कि दोनों देश एक-दूसरे के साथ सम्मान और दोस्ती के संबंध बनाए रखें।

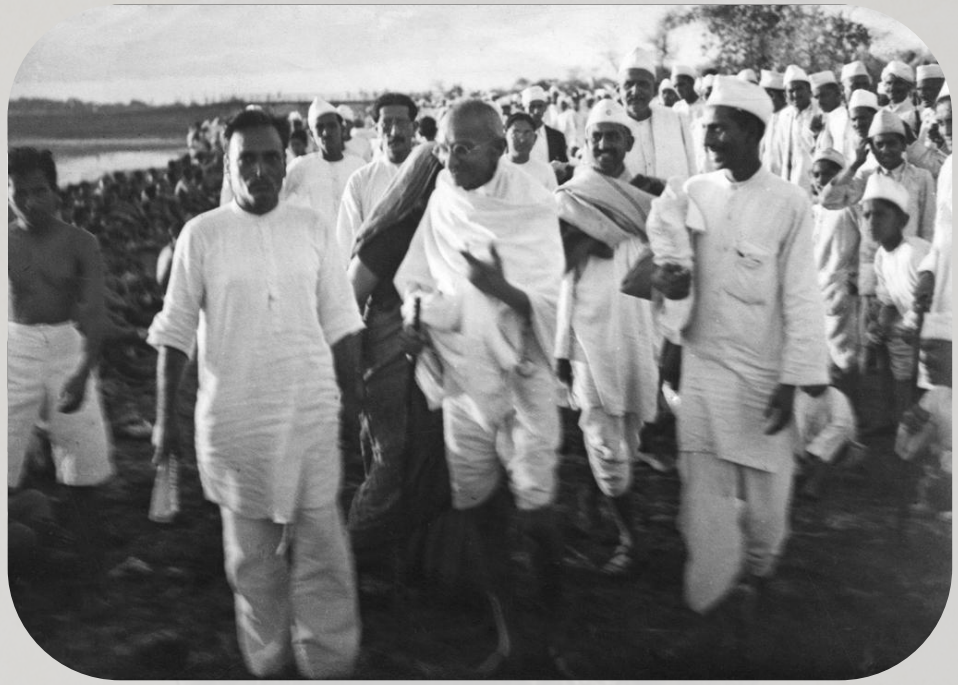

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

30 January

Other Indians were less forgiving. At his daily prayer meeting on the evening of 30 January, Gandhiji was shot dead by a young man.

बहुत सारे भारतीयों को उनका यह सहृदय आचरण पसंद नहीं था। 30 जनवरी की शाम को गाँधी जी की दैनिक प्रार्थना सभा में एक य़वक ने उनको गोली मारकर मौत की नींद सुला दिया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The assassin, who surrendered afterwards, was a Brahmin from Pune named Nathuram Godse, the editor of an extremist Hindu newspaper who had denounced Gandhiji as "an appeaser of Muslims".

उनके हत्यारे ने कुछ समय बाद आत्मसमर्पण कर दिया। वह नाथूराम गोडसे नाम का ब्राह्मण था। पुणे का रहने वाला गोडसे एक चरमपंथी हिंदुत्ववादी अखबार का संपादक था। वह गाँधी जी को "मुसलमानों का खुशामदी" कहकर उनकी निंदा करता था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Gandhiji's death led to an extraordinary outpouring of grief, with rich tributes being paid to him from across the political spectrum in India, and moving appreciations coming from such international figures as George Orwell and Albert Einstein.

गाँधी जी की मृत्यु से चारों ओर गहरे शोक की लहर दौड गई। भारत भर के राजनीतिक फलक पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। जॉर्ज ऑरवेल तथा एलबर्ट आइंस्टीन जैसे विख्यात गैर-भारतीयों ने भी उनकी मृत्यु पर हृदयस्पर्शी शब्दों में शोक संदेश भेजे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ **Knowing Gandhi (Public voice and private scripts)**

❖ **गाँधी को समझना (सार्वजनिक स्वर और निजी लेखन)**

One important source is the writings and speeches of Mahatma Gandhi and his contemporaries, including both his associates and his political adversaries.

इस दिशा में महात्मा गाँधी और उनके सहयोगियों व प्रतिद्वंद्वियों, दोनों तरह के समकालीनों के लेखन और भाषण एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

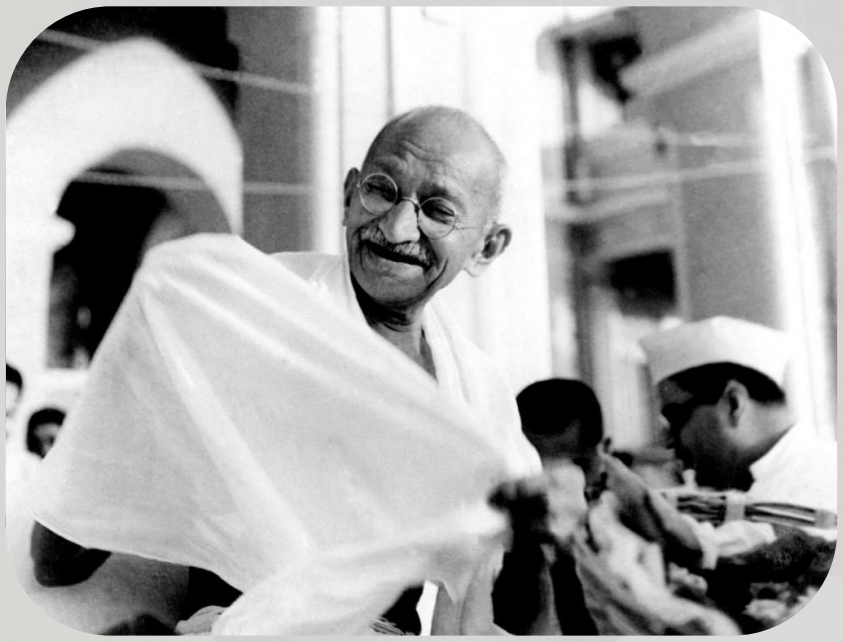

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

महात्मा गाँधी की मृत्यु, एक प्रचलित चित्र
लोक छवियों में महात्मा गाँधी को एक देवता का रूप दे दिया गया था और उन्हें राष्ट्रवादी आंदोलन में एकीकरण को समर्पित शक्ति के रूप में देखा जाता था। यहाँ आप जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल, यानी कांग्रेस के भीतर दो अलग-अलग धाराओं के प्रतिनिधियों को गाँधी जी की चिता के दोनों ओर खड़ा हुआ देख सकते हैं। मध्य में स्वर्ग से महात्मा गाँधी उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

In letters we see people expressing their anger and pain, their dismay and anxiety, their hopes and frustrations in ways in which they may not express themselves in public statements.

इन पत्रों में हम लिखने वाले को अपना गुस्सा और पीड़ा, असंतोष और बेचैनी, अपनी आशाएँ और हताशाएँ व्यक्त करते हुए देख सकते हैं। इनमें से बहुत सारी बातों को वह अपने सार्वजनिक वक्तव्यों में व्यक्त नहीं कर सकते।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

But we must remember that this private-public distinction often breaks down. Many letters are written to individuals, and are therefore personal, but they are also meant for the public.

लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि कई बार निजी–सार्वजनिक का यह फर्क टूट जाता है। बहुत सारे पत्र व्यक्तियों को लिखे जाते हैं इसलिए वे व्यक्तिगत पत्र होते हैं लेकिन कुछ हद तक वे जनता के लिए भी होते हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

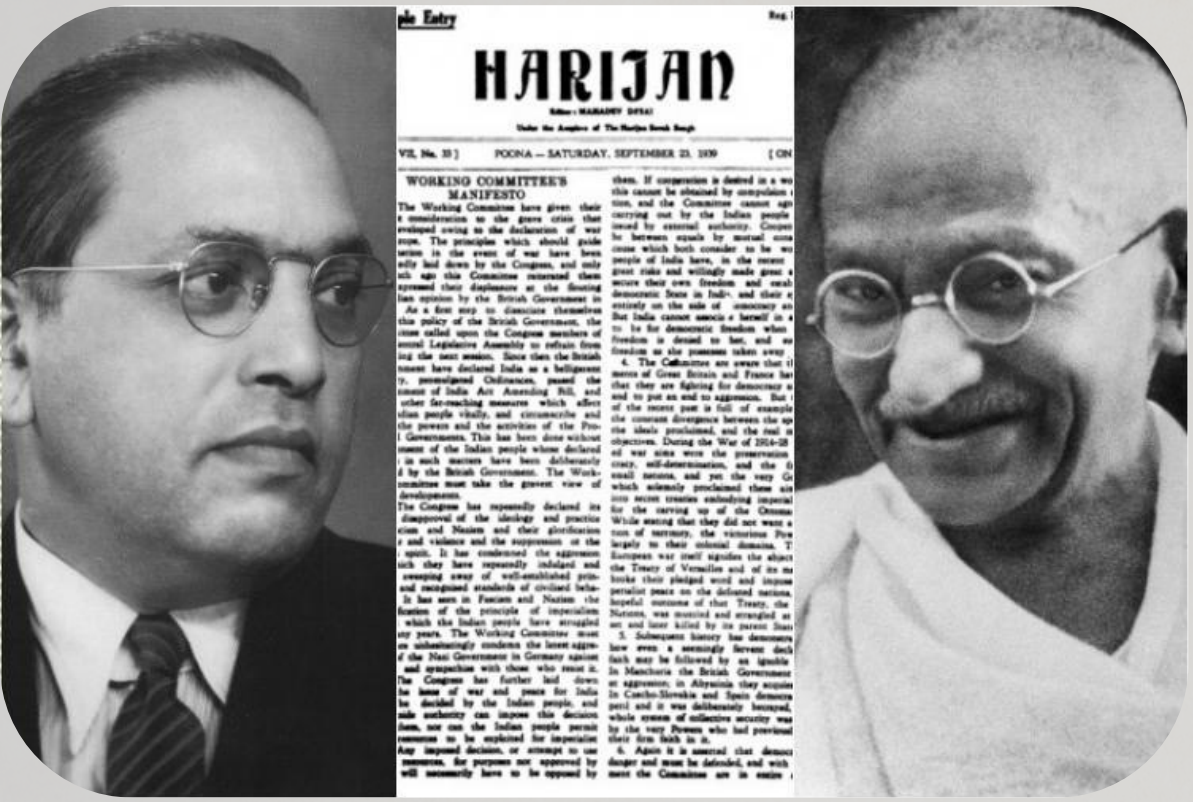

Mahatma Gandhi regularly published in his journal, Harijan, letters that others wrote to him. Nehru edited a collection of letters written to him during the national movement and published A Bunch of Old Letters.

महात्मा गाँधी हरिजन नामक अपने अखबार में उन पत्रों को प्रकाशित करते थे जो उन्हें लोगों से मिलते थे। नेहरू ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान उन्हें लिखे गए पत्रों का एक संकलन तैयार किया और उसे ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स (पुराने पत्रों का पुलिंदा) के नाम से प्रकाशित किया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖One event through letters

In the 1920s, Jawaharlal Nehru was increasingly influenced by socialism, and he returned from Europe in 1928 deeply impressed with the Soviet Union.

❖ एक घटना पत्रों के आइने में

1920 के दशक में जवाहरलाल नेहरू समाजवाद से लगातार प्रभावित होते जा रहे थे और **1928** में जब वे यूरोप की यात्रा से लौटे तो सोवियत संघ के प्रयोगों से गहरे तौर से प्रभावित थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

As he began working closely with the socialists (Jayaprakash Narayan, Narendra Dev, N.G. Ranga and others), a rift developed between the socialists and the conservatives within the Congress. After becoming the Congress President in 1936, Nehru spoke passionately against fascism, and upheld the demands of workers and peasants.

जब उन्होंने समाजवादियों (जयप्रकाश नारायण, नरेन्द्र देव, एन.जी. रंगा एवं अन्य) के साथ घनिष्ठतापूर्वक काम करना शुरू किया तो कांग्रेस के भीतर समाजवादियों और रूढ़िवादियों के बीच एक खाई पैदा हो गई। **1936** में कांग्रेस का अध्यक्ष बनने के बाद नेहरू ने फ़ासीवाद के खिलाफ़ जमकर बयान दिए और मजदूरों व किसानों की माँगों का समर्थन किया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Worried by Nehru's socialist rhetoric, the conservatives, led by Rajendra Prasad and Sardar Patel, threatened to resign from the Working Committee, and some prominent industrialists in Bombay issued a statement attacking Nehru.

नेहरू के समाजवादी वक्तव्यों से चिंतित रूढ़िवादियों ने राजेन्द्र प्रसाद और सरदार पटेल के नेतृत्व में कांग्रेस वर्किंग कमेटी से इस्तीफ़े की धमकी दे डाली। दूसरी ओर, बम्बई के कुछ प्रसिद्ध उद्योगपतियों ने नेहरू की आलोचना करते हुए बयान जारी कर दिया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Both Prasad and Nehru turned to Mahatma Gandhi and met him at his ashram at Wardha. The latter acted as the mediator, as he often did, restraining Nehru's radicalism and persuading Prasad and others to see the significance of Nehru's leadership.

In A Bunch of Old Letters, 1958, Nehru reprinted many of the letters that were exchanged at the time. Read the extracts in the following pages.

इसके बाद प्रसाद और नेहरू, दोनों महात्मा गाँधी के पास गए और वर्धा स्थित उनके आश्रम में उनसे मिले। गाँधी जी ने एक बार फिर मध्यस्थ की भूमिका अदा करते हुए नेहरू के रेडिकल तेवरों पर अंकुश लगाने तथा प्रसाद एवं अन्य नेताओं को नेहरू के नेतृत्व की अहमियत पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया।

ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स में नेहरू ने उस समय के बहुत सारे पत्रों को प्रकाशित किया है। इन पत्रों के अंशों को आगे पढ़िए:

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

➢ From A Bunch of Old Letters

My dear Jawaharlalji, **Wardha, July 1, 1936**

Since we parted yesterday we have had a long conversation with Mahatmaji and a prolonged consultation among ourselves. We understand that you have felt much hurt by the course of action taken by us and particularly the tone of our letter has caused you much pain.

➢ ए बंच ऑफ लेटर्स से

मेरे प्रिय जवाहरलाल जी, वर्धा, **1** जुलाई **1936**

कल आपसे विदा लेने के बाद हमने महात्मा जी के साथ लंबी बातचीत और आपस में देर तक चर्चा की। हम समझते हैं कि आपको हमारी ओर से अपनाए गए मार्ग पर काफी दुख है और हमारे पत्र के भावों से आप विशेषतः आहत हुए हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

It was never our intention either to embarrass you or to hurt you and if you had suggested or indictated that it hurt you we would have without the least hesitation amended or altered the letter. But we have decided to withdraw it and our resignation on a reconsideration of the whole situation.

आपको शर्मिंदा करना या आपको चोट पहुँचाना कभी भी हमारा इरादा नहीं था और अगर आपको एसा लगता है कि इससे आपको ठेस पहुँची है तो हम बिना किसी हिचक के अपना पत्र वापस ले लेते या उसमें संशोधन कर लेते। परंतु हमने समग्र स्थिति पर पुनर्विचार करने के बाद यह पत्र तथा अपने इस्तीफे वापस लेने का फैसला कर लिया है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

We have felt that in all your utterances as published in the Press you have been speaking not so much on the general Congress programme as on a topic which has not been accepted by the Congress and in doing so you have been acting more as the mouthpiece of the minority of our colleagues on the Working Committee as also on the Congress than the mouthpiece of the majority which we expected you as Congress President to do.

हमें लगता है कि प्रेस में छपे आपके सारे बयानों में आप कांग्रेस के सामान्य कायंक्रम पर उतना नहीं बोल रहे हैं जितना कि एक एसे विषय पर बोल रहे हैं जिसे कांग्रेस ने स्वीकृति नहीं दी है और एसा करते हुए आप वर्किंग कमेटी में हमारे मुट्ठी भर सहयोगियों और कांग्रेस के अल्पसंख्यक वर्ग के प्रवक्ता की तरह बोल रहे हैं न कि बहुल वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में, जिसकी कांग्रेस अध्यक्ष के नाते हमें आपसे अपेक्षा थी।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

There is regular continuous campaign against us treating us as persons whose time is over, who represent and stand for ideas that are worn out and that have no present value, who are only obstructing the progress of the country and who deserve to be cast out of the positions which they undeservedly hold ...

हमारे विरुद्ध लगातार एक अभियान चलाया जा रहा है जिसमें हमें एसे व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिनका समय बीत चुका है, जो पुराने पड चुके और वर्तमान में अप्रासंगिक हो चुके विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमें एसे लोगों के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है जो देश की प्रगति में बाधक हैं और जिन्हें उन पदों से हटा दिया जाना चाहिए जो उन्होंने अनाधिकार प्राप्त कर लिए हैं...

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

we have felt that a great injustice has been and is being done to us by others, and we are not receiving the protection we are entitled from you as our colleague and as our President ...

Yours sincerely

Rajendra Prasad

हमने महसूस किया है कि अन्य लोगों ने हमारे साथ भारी अन्याय किया है और कर रहे हैं, तथा हमें आपसे वह संरक्षण नहीं मिल रहा है जो एक सहकर्मी और हमारा अध्यक्ष होने के नाते हमें आपसे मिलना चाहिए...।

आपका

राजेन्द्र प्रसाद

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

My Dear Bapu **Allahabad, July 5, 1936**

I arrived here last night. Ever since I left Wardha I have been feeling weak in body and troubled in mind. ... Since my return from Europe, I found that meetings of the Working Committee exhaust me greatly; they have a devitalising effect on me and I have almost the feeling of being older in years after every fresh experience ...

मेरे प्रिय बापू, इलाहाबाद, **5** जुलाई **1936**

मैं कल रात ही यहां पहुँचा हूँ। जब से मैं वर्धा से आया हूं, शारीरिक दुर्बलता और मानसिक अशांति से घिरा हुआ हूँ। ... य्रोप से लौटने के बाद से मैंने पाया है कि वकिंग कमेटी की बैठकों में मैं बुरी तरह थक जाता हूँ। मेरी ऊर्जा क्षीण पड जाती है और हर नए अनुभव के बाद मैं और ज्यादा बूढ़ा महसूस करने लगता हूँ।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

I am grateful to you for all the trouble you took in smoothing over matters and in helping to avoid a crisis.

I read again Rajendra Babu's letter to me (the second one) and his formidable indictment of me ...

चीजों को दुरुस्त करने और संकट को टालने में आपने जो कष्ट उठाया है उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।

मैंने राजेन्द्र बाबू द्वारा भेजा गया (दूसरा) पत्र दोबारा पढ़ा है और उन्होंने जो गंभीर आरोप मुझ पर लगाए हैं उन्हें देखा है...।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

For however tenderly the fact may be stated, it amounts to this that I am an intolerable nuisance and the very qualities I possess – a measure of ability, energy, earnestness, some personality which has a vague appeal – become dangerous for they are harnessed to the wrong chariot (socialism). The conclusion from all this is obvious

तथ्य को चाहे कितनी भी विनम्रता से प्रस्तुत किया जाए, उनका आशय यह है कि मैं एक असहनीय मुसीबत बन चुका हूं और मेरे जो भी गुण हैं – थोड़ी-बहुत क्षमता, ऊर्जा, गंभीरता, कमोबेश प्रभावित करने वाला व्यक्तित्व – सभी खतरनाक बन चुके हैं क्योंकि वे एक गलत रथ (समाजवाद) को आगे बढ़ा रहे हैं। इन बातों के निष्कर्ष स्पष्ट हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

I have written at length, both in my book and subsequently, about my present ideas. There is no lack of material for me to be judged. Those views are not casual.

मैंने अपनी पुस्तक में और उसके पश्चात भी अपने वर्तमान विचारों के बारे में विस्तार से लिखा है। मेरे बारे में कोई फैसला लेने के लिए सामग्री की कमी नहीं है। मेरे वे विचार आकस्मिक भी नहीं हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

They are part of me, and though I might change them or vary them in future, so long as I hold them I must give expression to them. Because I attached importance to a larger unity I tried to express them in the mildest way possible and more as an invitation to thought than as fixed conclusions.

वे मेरा हिस्सा हैं और यद्यपि मैं भविष्य में उन्हें बदल सकता हूं लेकिन जब तक मैं उन्हें नहीं छोड़ता मुझे उनको अभिव्यक्त करना ही होगा। क्योंकि मैं व्यापक एकता को महत्वपूर्ण मानता हूं इसलिए मैंने कोमलतम शब्दों में उन्हें व्यक्त किया है और निश्चित निष्कर्ष की बजाय विचार-विमर्श के लिए प्रस्ताव के रूप में ही ज्यादा प्रस्तुत किया है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

I saw no conflict in this approach and in anything that the Congress was doing. So far as the elections were concerned I felt that my approach was a definite asset to us as it enthused the masses. But my approach, mild and vague as it was, is considered dangerous and harmful by my colleagues. I was even told that my laying stress always on the poverty and unemployment in India was unwise, or at any rate the way I did it was wrong ...

मुझे इस पद्धति में और कांग्रेस जो कुछ भी कर रही है, उसके बीच कोई टकराव दिखाई नहीं देता। जहां तक चुनावों का संबंध है, मेरा मानना है कि मेरा रवैया इस दिशा में निश्चय ही एक लाभकारी साधन था क्योंकि उससे जनता में उत्साह का संचार हुआ है। परंतु मेरे कोमल और अस्पष्ट रवैय को मेरे सहयोगी खतरनाक और क्षतिकारक मानते हैं। मुझे यहां तक कहा गया है कि भारत में गरीबी और बेरोजगारी पर इस तरह बार-बार जोर देना बेवकूफी थी, या कम से कम यह गलत तो था ही...।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

You told me that you intended issuing some kind of a statement. I shall welcome this for I believe in every viewpoint being placed before the country.

Yours affectionately

Jawaharlal

आपने मुझे बताया था कि आप कोई वक्तव्य जारी करना चाहते हैं। मैं आपके वक्तव्य का स्वागत करूंगा क्योंकि मैं मानता हूं कि हर दृष्टिकोण देश के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

प्रेमपूर्वक आपका

जवाहरलाल

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Dear Jawaharlal, **Segaon, July 15, 1936**

Your letter is touching. You feel the most injured party. The fact is that your colleagues have lacked your courage and frankness. The result has been disastrous. I have always pleaded with them to speak to you freely and fearlessly. But having lacked the courage, whenever they have spoken they have done it clumsily and you have felt irritated

प्रिय जवाहरलाल, सेगाँव, **15** जुलाई **1936**

तुम्हारा पत्र मेरा हृदय छू गया। तुम्हें सबसे ज्यादा ठेस महसूस हुई है। तथ्य यह है कि तुम्हारे साथियों के पास तुम्हारे जैसा साहस और बेबाकी नहीं है। इसके परिणाम विनाशकारी रहे हैं। मैंने उन्हें हमेशा समझाया है कि वे तुमसे उन्मुक्त और निर्भय होकर बात करें। परंतु क्योंकि उनके पास साहस नहीं है इसलिए वे जब भी बोलते हैं ऊटपटाँग ही बोलते हैं और उससे तुम चिढ़ जाते हो।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

I tell you they have dreaded you, because of your irritability and impatience with them. They have chafed under your rebukes and magisterial manner and above all your arrogation of what has appeared to them your infallibility and superior knowledge. They feel you have treated them with scant courtesy and never defended them from socialist ridicule and even misrepresentation.

मैं तुम्हें बताता हूं, वे तुम्हें इसलिए डरा रहे हैं क्योंकि तुम उनसे चिढ़ जाते हो और उनके सामने धैयं खो देते हो। वे तुम्हारी फटकार और साहबी अंदाज से आहत हैं और सबसे बढ़कर वे तुम्हारे भीतर जो अचूकता और श्रेष्ठतर ज्ञान का भाव दिखायो देता है उससे परेशान हैं। उन्हें लगता है कि तुमने उनके साथ न्यूनतम सौम्यता का व्यवहार भी नहीं किया है और कभी भी समाजवादियों के व्यंग्यबाणों या गलत निरूपण से उनका बचाव नहीं किया है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

I have looked at the whole affair as a tragi-comedy. I would therefore like you to look at the whole thing in a lighter vein. I suggested your name for the crown of thorns (Presidentship of the Congress). Keep it on, though the head be bruised. Resume your humour at the committee meetings. That is your most usual role, not that of care-worn, irritable man ready to burst on the slightest occasion.

मुझे यह पूरा प्रसंग एक त्रासद प्रहसन जैसा दिखाई दे रहा है। इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम भी इस पूरे मसले को हलका होकर देखो।

इस काँटों के ताज (कांग्रेस की अध्यक्षता) के लिए तुम्हारा नाम मैंने ही प्रस्तावित किया था। भले ही सिर छिल जाए इसे उतारना मत। कमेटी की बैठकों में अपना हास्य-विनोद दोबारा दिखाओ। यह तुम्हारे लिए सबसे सामान्य भूमिका है। चिंतित, चिड़चिड़े व्यक्ति का स्वभाव तुम पर नहीं जँचता।

THEME THIRTEEN

How I wish you could telegraph me that on finishing my letter you felt as merry as you were on that new year's day in Lahore when you were reported to have danced around the tricolour flag.

You must give your throat a chance.

Love

Bapu

मैं चाहता हूं कि तुम मुझे तार के माध्यम से बताओ कि यह पत्र पूम-झूम कर नाचे थे।

अपने कंठ को थोड़ा आराम दो।

मेरा प्यार

बापू

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖Framing a picture

❖ छवि गढ़ना

We need to remember that they are retrospective accounts written very often from memory.

हमें यह याद रखना चाहिए कि य आत्मकथाएँ प्रायः स्मृति के आधार पर लिखी गई होती हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

They tell us what the author could recollect, what he or she saw as important, or was keen on recounting, or how a person wanted his or her life to be viewed by others.

उनसे हमें पता चलता है कि लिखने वाले को क्या याद रहा, उसे कौन सी चीजें महत्त्वपूर्ण दिखाई दीं या वह क्या याद रखना चाहता था, या वह औरों की नज़र में अपनी ज़िंदगी को किस तरह दर्शाना चाहता है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖Through police eyes

❖पु लस की नजरों से

The letters and reports written by policemen and other officials were secret at the time; but now can be accessed in archives.

उस समय पुलिसकर्मियों तथा अन्य अधिकारियों द्वारा लिखे गए पत्र तथा रिपोर्टें गोपनीय होती थीं; लेकिन अब य दस्तावेज़ अभिलेखागारों में उपलब्ध हैं जिन्हें कोई भी देख सकता है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान बम्बई में कांग्रेस के वॉलंटियरों की पुलिस से भिड़ंत।

These reports were based on police information from the localities, but often expressed what the higher officials saw, or wanted to believe.

य रिपोर्टें स्थानीय इलाक़ों से पुलिस की मार्फ़त मिलने वाली सूचनाओं पर आधारित होती थीं लेकिन उनमें यह भी दिख जाता था कि आला अधिकारी क्या देखते थे या क्या मानना चाहते थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

While noticing the possibility of sedition and rebellion, they liked to assure themselves that these fears were unwarranted.

राजद्रोह और विद्रोह की संभावना मानते हुए भी वे ख़ुद को इस बात का आश्वासन देना चाहते थे कि इन आशंकाओं का कोई आधार नहीं है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The march was seen as a drama, an antic, a desperate effort to mobilise people who were unwilling to rise against the British and were busy with their daily schedules, happy under the Raj.

रिपोर्टों में इस यात्रा को एक नाटक, एक करतब, ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज उठाने के प्रति अनिच्छुक तथा शासन के अंतर्गत सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे लोगों को गोलबंद करने की एक हताश कोशिश के रूप में प्रस्तुत किया जाता था।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ **Fortnightly Reports of the Home Department (Confidential)**

FOR THE FIRST HALF OF MARCH 1930

The rapid political developments in Gujarat are being closely watched here. To what extent and in what directions they will affect political condition in this province, it is difficult to surmise at present.

❖ गृह विभाग की पाक्षिक रिपोर्टें (गोपनीय)

मार्च 1930 का पहला पखवाड़ा

गुजरात में आ रहे तेज़ राजनीतिक बदलावों पर यहां गहरी नज़र रखी जा रही है। इनसे प्रांत की राजनीतिक परिस्थितियों पर किस हद तक और क्या प्रभाव पड़ेगा, इसका अभी अंदाजा लगाना मुश्किल है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The peasantry is for the moment engaged in harvesting a good rabi; students are pre-occupied with their impending examinations.

रबी की फसल अच्छी हुई है इसलिए फिलहाल किसान फसलों की कटाई में व्यस्त हैं। विद्यार्थी आने वाली परीक्षाओं की तैयारी में जुटे हैं।

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT
CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन
स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Central Provinces and Berar

The arrest of Mr. Vallabh Bhai Patel caused little excitement, except in Congress circles, but a meeting organised by the Nagpur Nagar Congress Committee to congratulate Gandhi on the start of his march was attended by a crowd of over 3000 people at Nagpur.

मध्य प्रांत और बेरार

श्री वल्लभ भाई पटेल की गिरफ़्तारी पर कांग्रेसियों के अलावा और कहीं कोई खास उत्तेजना पैदा नहीं हुई। लेकिन नागपुर नगर कांग्रेस कमेटी द्वारा गाँधी की यात्रा शुरू होने पर उन्हें बधाई देने के लिए आयोजित सभा में **3,000** से ज्यादा लोग जुटे थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Bengal

The outstanding event of the past fortnight has been the start of Gandhi's campaign of civil disobedience. Mr. J.M. Sengupta has formed an All-Bengal Civil Disobedience Council, and the Bengal Provincial Congress Committee has formed an All Bengal Council of Disobedience. But beyond forming councils no active steps have yet been taken in the matter of civil disobedience in Bengal.

बंगाल

गाँधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत पिछले पखवाड़े की सबसे महत्वपूर्ण घटना रही। श्री जे.एम सेनगुप्ता ने अखिल बंगाल सविनय अवज्ञा परिषद् का गठन किया है। बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने अखिल बंगाल अवज्ञा परिषद् बनाई है। इन परिषदों के गठन के अलावा बंगाल में सविनय अवज्ञा के प्रश्न पर और कोई सक्रिय कदम अभी नहीं उठाया गया है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The reports from the districts show that the meetings that have been held excite little or no interest and leave no profound impression on the general population. It is noticeable, however, that ladies are attending these meetings in increasing numbers

जिलों से मिली रिपोर्टों से पता चलता है कि जो बैठकें आयोजित की गई उनमें लोगों ने कोई विशेष उत्साह नहीं दिखाया और आम जनता पर कोई गहरा असर नहीं छोड़ा है। गौरतलब बात यह है कि इन बैठकों में महिलाओं की संख्या बढ़ती जा रही है।

Bihar and Orissa

There is still little to report regarding Congress activity. There is a good deal of talk about a campaign to withhold payment of the chaukidari tax, but no area has yet been selected for experiment. The arrest of Gandhi is being foretold freely but it seems quite possible that nonfulfilment of the forecast is upsetting plans.

बिहार और उड़ीसा

कांग्रेस की गतिविधि के बारे में रिपोर्ट करने लायक कुछ खास नहीं है। चौकीदारी टैक्स का भुगतान न करने के बारे में एक अभियान की काफी चर्चा हो रही है लेकिन अभी इस प्रयोग के लिए किसी इलाके का चुनाव नहीं किया गया है। गाँधी की गिरफ्तारी के बारे में खूब कयास लगाए जा रहे हैं लेकिन एसा लगता है कि यह भविष्यवाणी सच साबित न हो पाने के कारण उनकी योजनाएँ धरी की धरी रह गई हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

MADRAS

The opening of Gandhi's civil disobedience campaign has completely overshadowed all other issues. General opinion inclines to regard his march as theatrical and his programme as impracticable, but as he is held in such personal reverence by the Hindu public generally, the possibility of arrest which he seems deliberately to be courting and its effect on the political situation are viewed with considerable misgiving.

मद्रास

गाँधी का सविनय अवज्ञा अभियान शुरू होने से बाकी मुद्दे हाशिय पर चले गए हैं। आम जनता उनकी यात्रा को नाटकीय और उनके कायंक्रम को अव्यावहारिक मानती है परंतु क्योंकि हिंदू जनता उन्हें अगाध श्रद्धा की दृष्टि से देखती है इसलिए गिरफ्तारी की संभावना, जिसके बारे में वे खुद बहुत उत्सुक हैं, और उसके राजनीतिक प्रभावों के बारे में काफी गलतफहमियां फैली हुई हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

The 12th of March was celebrated as the day of inaugurating the civil disobedience campaign. In Bombay the celebrations took the form of saluting the national flag in the morning.

12 मार्च को सविनय अवज्ञा अभियान के उद्घाटन दिवस के रूप में मनाया गया। बंबई में सुबह को राष्ट्रीय झंडे को सलामी दी गई।

Bombay

Press Kesari indulged in offensive language and in its usual attitude of blowing hot and cold wrote: "If the Government wants to test the power of Satyagraha, both its action and inaction will cause injury to it.

बम्बई

केसरी प्रेस ने आक्रामक भाषा का प्रयोग किया है और हमेशा की तरह आग उगलने के अंदाज में लिखा है : "अगर सरकार सत्याग्रह की ताकत परखना चाहती है तो उसे पता होना चाहिए कि सत्याग्रह की सक्रियता और निष्क्रियता, दोनों से सरकार को ही नुकसान पहुँचेगा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

If it arrests Gandhi it will incur the discontent of the nation; if it does not do that, the movement of civil disobedience will go on spreading. We therefore say that if the Government punishes Mr. Gandhi the nation will have won a victory, and if it lets him alone it will have won a still greater victory."

यदि सरकार गाँधी जी को गिरफ्तार करती है तो उसे राष्ट के कोप का भाजन बनना पड़ेगा और यदि सरकार एसा नहीं करती है तो सविनय अवज्ञा आंदोलन फैलता जाएगा। इसलिए हमारा मानना है कि अगर सरकार श्री गाँधी को दंडित करती है तो भी राष्ट की विजय होगी और अगर सरकार उन्हें अपने रास्ते पर चलने देती है तो राष्ट की और भी बड़ी विजय होगी।"

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

On the other hand the moderate paper Vividh Vritt pointed out the futility of the movement and opined that it could not achieve the end in view. It, however, reminded the government that repression would defeat its purpose.

दूसरी ओर विविध वृत्त नामक मध्यमार्गी अखबार ने इस आंदोलन की व्यर्थता की ओर संकेत किया है और कहा है कि यह आंदोलन अपना घोषित उद्देश्य प्राप्त नहीं कर पाया है लेकिन उसने सरकार को भी चेतावनी दी है कि दमन का रास्ता उसके उद्देश्य को कमजोर कर देगा।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖ FOR THE SECOND HALF OF MARCH 1930

Bengal

Interest has continued to centre round Gandhi's march to the sea and the arrangements which he is making to initiate a campaign of civil disobedience.

❖ मार्च 1930 का दूसरा पखवाड़ा

बंगाल

सबका ध्यान समुद्र तट तक गाँधी की यात्रा और सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने के लिए उनकी तैयारी पर केंद्रित है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

सविनय अवज्ञा और उससे आगे

The extremist papers report his doings and speeches at great length and make a great display of the various meetings that are being held throughout Bengal and the resolutions passed thereat. But there is little enthusiasm for the form of civil disobedience favoured by Gandhi ...

चरमपंथी अखबार उनकी गतिविधियों और भाषणों के बारे में विस्तार से लिख रहे हैं और पूरे बंगाल में हो रही बैठकों तथा उनमें पारित होने वाले प्रस्तावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जा रही है। परंतु गाँधी जिस सविनय अवज्ञा की वकालत कर रहे हैं उसके प्रति विशेष उत्साह नहीं दिखाई देता...।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Generally people are waiting to see what happens to Gandhi and the probability is that if any action is taken against him, a spark will be set to much inflammable material in Bengal. But the prospect of any serious conflagration is at present slight.

सामान्य रूप से लोग इस बात का इंतजार कर रहे हैं कि गाँधी के साथ क्या किया जाता है और संभावना यही है कि अगर उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई की गई तो बंगाल के ज्वलनशील हालात में चिंगारी भड़क उठेगी। लेकिन फिलहाल एसी आग भड़कने के कोई गंभीर आसार दिखाई नहीं देते।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Central Provinces and Berar

In Nagpur these meetings were well attended and most of the schools and colleges were deserted on the 12th March to mark the inauguration of Gandhi's march

The boycott of liquor shops and the infringement of forest laws appear to be the most probable line of attack.

मध्य प्रांत और बेरार

12 मार्च को गाँधी की यात्रा शुरू होने के अवसर पर नागपुर में इन बैठकों में काफी लोग शामिल हुए और ज्यादातर स्कूल-कॉलेज सूने दिखाई दिए।

शराब की दुकानों का बहिष्कार तथा वन क़ानूनों का उल्लंघन हमले की सबसे संभावित कायंदिशा दिखाई पड़ती है।

Punjab

It seems not improbable that organised attempts will be made to break the Salt Law in the Jhelum district; that the agitation relating to the non-payment of the water-tax in Multan will be revived; and that some movement in connection with the National Flag will be started probably at Gujranwala.

पंजाब

एसा लगता है कि झलम जिले में नमक क़ानून तोड़ने के लिए संगठित प्रयास किए जाएँगे; मुल्तान में जल कर न चुकाने के आंदोलन को पुनर्जीवित किया जाएगा; संभवत: गुजराँवाला में राष्ट्रीय झंडे के संबंध में कोई आंदोलन शुरू हो सकता है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

United Provinces

Political activity has undoubtedly intensified during the last fortnight. The Congress party feels that it must do something spectacular to sustain public interest. Enrolment of volunteers, propaganda in villages, preparations for breaking the salt laws on receipt of Mr. Gandhi's orders are reported from a number of districts.

संयुक्त प्रांत

पिछले पखवाड़े के दौरान राजनीतिक गतिविधियों में निश्चित रूप से तेज़ी आई है। कांग्रेस पार्टी का मानना है कि जनता की रुचि बनाए रखने के लिए उसे कुछ अनोखा काम करना चाहिए। श्री गाँधी के आदेश पर वॉलंटियरों की भर्ती, गाँवों में प्रचार और नमक क़ानून के उल्लंघन की तैयारी जैसी गतिविधियां कई जिलों से आ रही हैं।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖FOR THE FIRST HALF OFAPRIL 1930

United Provinces

Events have moved rapidly during the fortnight. Apart from political meetings, processions and the enrolment of volunteers, the Salt Act has been openly defied at Agra, Cawnpore, Benaras, Allahabad, Lucknow, Meerut, Rae Bareli, Farukhabad, Etawah, Ballia and Mainpuri.

❖अप्रैल 1930 का पहला पखवाड़ा

संयुक्त प्रांत

इस पखवाड़े में चीजें बहुत तेज़ी से आगे बढ़ी है। राजनीतिक सभाओं, जुलूसों और वॉलंटियरों की भर्ती के अलावा आगरा, कानपुर, बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ, मेरठ, रायबरेली, फर्रुखाबाद, इटावा, बलिया और मैनपुरी में नमक कानून की खुलेआम अवहेलना की जा रही है।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Pt. Jawaharlal Nehru was arrested at Cheoki railway station early on the morning of April 14 as he was proceeding to the Central Provinces to attend a meeting of Youth League. He was at once taken direct to Naini Central Jail, where he was tried and sentenced to six months simple imprisonment.

चेवकी रेलवे स्टेशन पर पंडित जवाहरलाल नेहरू को **14** अप्रैल की सुबह गिरफ़्तार कर लिया गया था। उस समय वह य्थ लीग की बैठक में शामिल होने मध्य प्रांतों की ओर जा रहे थे। उन्हें रेलवे स्टेशन से फौरन नैनी सेंट्रल जेल ले जाया गया। वहां उन पर मुकदमा चला और उन्हें **6** माह के साधारण कारावास की सजा दी गई।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Bihar and Orissa

There have been, or are now materialising, spectacular, but small-scale, attempts at illicit salt manufacture in a few places ...

बिहार और उड़ीसा

कुछ स्थानों पर गैरक़ानूनी नमक उत्पादन के अनोखे, मगर छोटे प्रयास हो रहे हैं...।

Central Provinces

In Jubbalpore Seth Govinddass has attempted to manufacture chemical salt at a cost many times in excess of the market price of clean salt.

मध्य प्रांत

जबलपुर में सेठ गोविंद दास ने रासायनिक नमक बनाने का प्रयास किया है जिसकी लागत सामान्य नमक के बाजार भाव से कई गुना ज्यादा रही।

Madras

Considerable opposition was shown at Vizagapatam to the Police when they attempted to seize salt made by boiling sea water, but elsewhere resistance to the seizure of illicit salt has been half hearted.

मद्रास

जब पुलिस ने समुद्र के पानी को उबालकर बनाए गए नमक को जब्त करने का प्रयास किया तो विशाखापटनम में पुलिस को भारी विरोध का सामना करना पड़ा। अन्य स्थानों पर अवैध नमक को जब्त करने का कोई खास विरोध नहीं किया गया है।

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT
CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन
स वनय अवज्ञा और उससे आगे

Bengal

In the mufassal efforts have been made to manufacture illicit salt, the main operation areas being the districts of 24-Parganas and Midnapore.

Very little salt has actually been manufactured and most of it has been confiscated and the utensils in which it was manufactured destroyed.

बंगाल

मुफ़स्सिल इलाकों में अवैध नमक निर्माण की कोशिशें की गई हैं। 24 परगना और मिदनापुर जिले इन गतिविधियों का मुख्य केंद्र रहे हैं।

वास्तव में बहुत कम नमक बनाया गया है और उसमें से भी ज़्यादातर जब्त कर लिया गया है। उसको बनाने के लिए प्रयोग किए गए बर्तनों को नष्ट कर दिया गया।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

❖From newspapers

❖ अखबारों से

One more important source is contemporary newspapers, published in English as well as in the different Indian languages, which tracked Mahatma Gandhi's movements and reported on his activities, and also represented what ordinary Indians thought of him.

अंग्रेज़ी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं में छपने वाले समकालीन अख़बार भी एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं जो महात्मा गाँधी की गतिविधियों पर नजर रखते थे और उनके बारे में ख़बरें छापते थे। य अख़बार इस बात का भी संकेत देते हैं कि आम भारतीय उनके बारे में क्या सोचते थे।

THEME THIRTEEN

MAHATMA GANDHI AND THE NATIONALIST MOVEMENT

CIVIL DISOBEDIENCE AND BEYOND

महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन

स वनय अवज्ञा और उससे आगे

They were published by people who had their own political opinions and world views.

य अख़बार प्रकाशित करने वाले एसे लोग थे जिनकी अपनी राजनीतिक सोच और विश्व दृष्टिकोण था।

The accounts that were published in a London newspaper would be different from the report in an Indian nationalist paper.

लंदन से निकलने वाले अख़बार के विवरण भारतीय राष्ट्रवादी अख़बार में छपने वाली रिपोटों जैसे नहीं हो सकते थे।

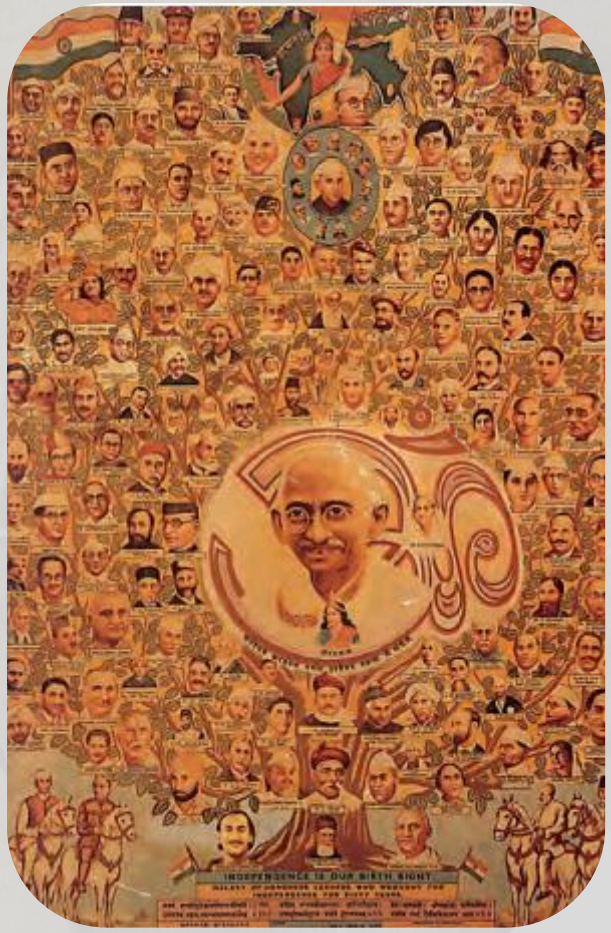

इस तरह के चित्रों से यह प्रदर्शित होता है कि महात्मा गाँधी के बारे में लोगों की समझ क्या थी और लोकप्रिय छापों में उन्हें कैसे व्यक्त किया जाता था। राष्ट्रवाद के वृक्ष में महात्मा गाँधी केंद्र में छाया के रूप में दिख रहे हैं तथा उनमें चारों ओर अन्य नेताओं और मनीषियों के चित्र हैं।

THANKS

FOR

WATCHING